तीसमारखां

मिगुएल द सरवांते के प्रसिद्ध उपन्यास
DON QUIXOTE
का सरल हिन्दी रूपान्तर
रूपान्तरकार : श्रीकान्त व्यास

शिक्षा भारती, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली द्वारा प्रकाशित

मूल्य : बीस रुपये (20.00)
संस्करण : 1991 © प्रकाशक
TEESMAR KHAN (Novel)
by Miguel de Cervantes

तीसमार खां

तीसमारखां

वह हमेशा पढ़ता ही रहता था। जब देखो तब किताब हाथ में और नजर अक्षरों पर। दिन-रात वह पढ़ता रहता था। पढ़ने के सिवा उसे किसी बात की खबर नहीं रहती थी। खाने-पीने तक का ख्याल नहीं रहता था, न किसी से बोलना, न किसी से बात करना। बस किताब और वह।

तरह-तरह की किताबें पढ़ता था वह। वीरों की कहानियां, युद्धों के किस्से, साहस और पराक्रम की गाथाएं, दूर देशों की यात्रा और साहसपूर्ण खोजों की कथाएं।

दिन-रात वह इन कहानियों में डूबा रहता था। किसी से बातें करता था तो इसी विषय पर। सपने देखता था तो इन्हीं कहानियों के। इस तरह की किताबों का उसे इतना शौक था कि वह इन्हें खरीदने के लिए अपने घर की चीजें बेच देता था। चीज के न रहने पर वह अपनी ज़मीन-जायदाद बेचकर किताबों के लिए पैसे जमा किया करता था। यहां तक कि वह खाना न खरीदकर किताबें खरीदना पसन्द करता था।

और वह इन कहानियों की किताबों में जो कुछ पढ़ता था, उस सब पर पुरा विश्वास भी करता था। वह परियों और जादू के देश को भी सच मानता था। भूत-प्रेतों और दैत्यों के किस्सों पर उसे कभी शक नहीं होता था।

उसके घर का सारा काम-काज उसकी एक भतीजी करती थी। उसे तो अपनी किताबों के अलावा और किसी चीज की सुध नहीं रहती थी। यहां तक कि वह नौकर को भी किताब पढ़कर सुनाया करता था और उसे काम से रोकता था।

इस तरह बहुत पढ़ने के कारण थोड़े ही दिनों में उसका दिमाग फिर गया। न ठीक से खाना, न सोना। दिमाग खराब न हो तो क्या हो! अब वह दिन-रात कल्पना की दुनिया में ही मगन रहने लगा। अब वह दिन में भी सपने देखने लगा। वह आधा पागल हो गया। उसने अपने-आपको भी एक बड़ा भारी वीर मान लिया। वह सोचने लगा कि वह खुद भी एक बड़ा पराक्रमी योद्धा है और लोगों को अन्याय से बचाना और उनकी रक्षा

करना उसका काम है। वह कई बड़ी-बड़ी लड़ाइयां लड़ चुका है और बड़े-बड़े वीरों को मार चुका है। उसने मान लिया कि

उसने अपनी तलवार के ज़ोर से एक बड़ा भारी साम्राज्य कायम किया है और अनेक देशों को जीता है। उसने अरब और ईरान को हाल में ही जीतकर अपने राज्य में मिलाया था। अब वह शाहंशाह था। दुनिया जहान का मालिक था!

एक बार उसे ख्याल आया कि मैंने इतना बड़ा राज तो कायम कर लिया है, लेकिन अपने राज के लोगों को सुख से रखना भी मेरा ही काम है। अपने राज के लोगों का नहीं बल्कि दुनिया-भर के लोगों का दुःख दूर करने का उसने बीड़ा उठाया। उसने तय किया कि लोगों का दुःख दूर करने के मार्ग में जो भी कठिनाइयां आएंगी, उन्हें वह खुशी के साथ सहेगा और हर तरह का कष्ट उठाकर लोगों का दुःख दूर करेगा।

और जब एक विचार आ गया तो अब उसे पूरा भी करना चाहिए। उसने संसार-भर के अन्यायियों से लड़ने की तैयारी शुरू कर दी। एक योद्धा खाली हाथ तो लड़ने जा नहीं सकता। उसे जिरह-बख्तर और हरबे-हथियार की जरूरत होती है। बहुत खोजने पर उसे घर में अपने पुरखों के जमाने का एक पुराना बख्तर मिल गया। उसे मांज-घिसकर उसने चमका लिया और फिर इधर-उधर खोजने पर उसे एक पुरानी ढाल और जंग लगी हुई तलवार भी मिल गई। कुछ और खोजने पर उसे एक भाला भी मिल गया।

अब बरसों बाद उसे अपने पुराने घोड़े की याद आई। उसने नौकर से घोड़ा निकलवाया। घोड़े को बहुत दिनों से ठीक से दाना-पानी नहीं मिला था। वह बहुत कमज़ोर हो गया था। बिलकुल हड्डी-हड्डी रह गया था। पेट पिचक गया था और टांगें सूख गई थीं। लेकिन वह अपने घोड़े को सिकन्दर से कम नहीं मानता था। इस हालत में भी वह उसे संसार का सबसे तगड़ा और सबसे सुन्दर घोड़ा मानता था।

अब घोड़े का नाम रखना था। प्रत्येक वीर योद्धा अपने घोड़े का कुछ न कुछ नाम रखता है। चार दिन तक वह घोड़े का नाम सोचता रहा। कई नाम याद आए लेकिन उसे एक भी पसन्द न था। बहुत सोच-विचार के बाद उसने एक नाम खोजा—'रोजीनाण्ट'। स्पेन की भाषा में इसका अर्थ होता है—'वह जिसकी हालत कभी खराब थी।'

घोड़े का नाम रखने के बाद अब अपना नाम भी उसे खोजना था। यह कोई आसान काम नहीं था। नाम ऐसा हो जो अपना पूरा परिचय दे सके। नाम सुनकर लोग समझ लें कि कोई बहुत बड़ा योद्धा है। आठ दिन तक लगातार वह अपना नाम खोजता रहा। बहुत सोच-विचार किया, लेकिन कोई नाम उसे पसन्द नहीं आया। अंत में आठवें दिन उसे एक नाम सूझा—'क्विक्ज़ोट'। अब वह डान क्विक्ज़ोट था। स्पेनी भाषा में क्विक्ज़ोट का अर्थ होता है, बख्तर का एक भाग। इसके बाद उसने, जिस प्रदेश में उसका जन्म हुआ था, उसके आधार पर एक नाम और जोड़ लिया। इस प्रकार अब उसका नाम था—डान क्विक्ज़ोट डीला माशा। लेकिन अभी एक चीज़ और बाकी रह गई थी। भविष्य में उसे एक राजकुमारी से विवाह भी करना था। अपनी कल्पना में उसने एक राजकुमारी का नक्शा बनाया और उसका नाम रखा—डेलसीनिया डेल टोबोसो। टोबोसो एक नगर का नाम था।

2

अब बिना ज़रा-सा भी समय बरबाद किए उसे अपने काम पर निकल जाना था। एक दिन बहुत जल्दी सवेरे उठकर वह चुपचाप बिना किसी से कुछ कहे घर के पिछले दरवाज़े से निकल पड़ा। अपने प्रिय घोड़े टोजीनाण्ट पर वह सवार था। ज़िरह-बख़्तर से लैस, हाथ में भाला, सिर पर टोप। आज उसकी खुशी की सीमा नहीं थी। आज वह संसार का दुःख दूर करने के लिए निकला था। लेकिन अभी वह कुछ ही दूर पहुंचा था कि उसे एक बात याद आ गई। एक सरदार के रूप में वह दुनिया फतह करने निकला था। लेकिन सरदार क्या योंही बन जाते हैं। उसने किताबों में पढ़ा था कि किसी को सरदार बनाते समय बाकायदा कुछ रस्म वगैरह करनी पड़ती है। इसलिए उसने यह सोचा कि पहले चलकर किसी कायदे के मुताबिक सरदार का खिताब लिया जाए। उसने अपने घोड़े की लगाम ढीली कर दी और यह तय किया कि घोड़ा उसे जिस दिशा में ले जाएगा उसी दिशा में आगे जाकर वह किसी से अपने को सरदार घोषित करा लेगा।

सारे दिन वह चलता रहा। लेकिन उसे रास्ते में कोई मिला ही नहीं। तेज धूप में उसे दिन-भर चलना पड़ा था। वह थककर चूर हो चुका था। भूख भी बहुत ज़ोरों की लगी थी। उसे आराम की जरूरत महसूस हुई। कुछ दूरी पर उसे एक सराय

दिखाई दी। वह सराय के सामने पहुंचा। सराय के दरवाज़े पर दो लड़कियां खड़ी हुई थीं।

लेकिन बात यह थी कि डान क्विक्ज़ोट हमेशा कल्पना को दुनिया में रहता था, इसलिए उसने इस सराय को एक किला समझ लिया था। इस किले के चारों ओर चहारदीवारी थी। उसके आस-पास खाई थी। खाई को पार करने के लिए एक पुल था, जिसे ज़रूरत के अनुसार उठाया-गिराया जा सकता था। वे दोनों लड़कियां उस किले में रहने वाले सरदार की लड़कियां थीं। जब उन्होंने एक हथियारबन्द सवार को अपनी ओर आते देखा तो वे डरकर अन्दर भाग गईं।

उन्हें भागते देखकर क्विक्ज़ोट ने कहा, "बहनो, मुझसे मत डरो, मैं तो अरब का बादशाह हूं और दूसरों का दुख दूर करने को निकला हूं। मैं एक बहादुर आदमी हूं। मैं औरतों को चोट नहीं पहुंचाता, बल्कि उनका सम्मान करता हूं।"

दोनों लड़कियां रुक गईं और क्विक्ज़ोट की ओर देखकर हंस पड़ीं। हंसते देखकर क्विक्ज़ोट को गुस्सा आ गया। वह बोला, "इतने बड़े सरदार की लड़कियां होकर तुम लोगों को इस तरह हंसना शोभा नहीं देता।"

इस पर वे लड़कियां और ज़ोर से हंसने लगीं। क्विक्ज़ोट का गुस्सा बढ़ता ही गया। अन्दर बैठा सराय वाला उसकी बातों को सुन रहा था। वह ज़रा मज़ाक-पसन्द आदमी था। उसने दुनिया को फतह करने वाले बहादुर से कुछ बात करने का निश्चय किया। वह बाहर आया। हंसी दबाकर वह बोला, "हुज़ूर, मैं आपकी क्या खिदमत कर सकता हूं? आइए, अन्दर आइए!"

सराय वाले को उसने किले का सरदार समझा। इतने बड़े किले का सरदार और इतने अदब से बात करे! क्विक्ज़ोट खुश

हो गया। वह बोला, 'सरदार, मेरे लिए कोई खास तकलीफ़ करने की जरूरत नहीं है। मुझे बस थोड़ा वक्त काटना है।"

यह कह कर वह घोड़े से उतरा और घोड़े पर नजर रखने के लिए कहकर बड़ी शान के साथ सराय में घुसा। अब तक लड़कियों ने हंसना बन्द कर दिया था। उन्होंने ज़िरह बख्तर उतारने में उसकी मदद करनी शुरू की। बख्तर तो उतरा लेकिन सिर का टोप उतरता ही नहीं था। वह इस तरह रस्सी से बंधा था कि बिना रस्सी को काटे वह सिर से अलग ही नहीं हो सकता था। क्विक्ज़ोट ने रस्सी काटने का घोर विरोध किया। नतीजा यह हुआ कि टोप सारी रात उसके सिर पर रहा।

सरायवाला घोड़े को तबेले में बांधकर लौट आया। उसने क्विक्ज़ोट को खाने के लिए एक टुकड़ा रोटी और सूखी हुई मछली दी। खाना खाने में क्विज़ोट को बड़ी तकलीफ हो रही थी, क्योंकि टोप की रस्सी गले में बंधी थी। लेकिन वह रस्सी कटवाने के लिए तैयार नहीं था। योरोप में लोग पानी की जगह ज्यादातर शराब ही पीते हैं, क्योंकि वहां ठंड बहुत पड़ती है। सरायवाला भी क्विज़ोट के लिए थोड़ी शराब ले आया। लेकिन अब उसे पिलाई कैसे जाए। अन्त में उसने एक नली क्विक्ज़ोट के मुंह में दी और उसमें उंडेलकर शराब उसे पिलाई। लड़कियां यह सब देखकर हंसते-हंसते लोट-पोट हो रही थीं।

क्विक्ज़ोट अपने इस सम्मान से बहुत खुश था। उसने यह समझा कि उसके सम्मान में किले के सरदार ने एक बहुत बड़ी दावत दी है। वह खुश हो गया और उसे धन्यवाद देने लगा। लेकिन तभी चिन्ता से उसका चेहरा उतर गया। अभी उसे सरदार का खिताब मिला ही नहीं था। वह सराय के मालिक को तबेले

में ले गया। दरवाजा अन्दर से बंद करके वह उसके पैरों पर गिर पड़ा और बोला, "तुम्हें मुझे एक चीज देनी ही पड़ेगी। जब तक तुम दोगे नहीं, मैं तुम्हारे पैर नहीं छोड़ूंगा।"

सरायवाला उसकी बात सुनकर घबराया। यह देखकर क्विक्ज़ोट फौरन बोला, "भाई, मैं आपसे ऐसी-वैसी चीज नहीं मांग रहा हूं। सिर्फ मैं यही चाहता हूं कि तुम मुझे सरदार का खिताब दे दो। जरा धूम-धाम के साथ तुम मुझे सरदार बना दो। इसके बाद ही मैं दुनिया फतह कर सकूंगा और दुखियों के दुःख दूर कर सकूंगा।"

सरायवाला उसके पागलपन को देखकर कुछ आश्चर्य में पड़ा, लेकिन फिर उसे भी हंसी सूझी। वह राजी हो गया। डान क्विक्ज़ोट ने कहा, "आज रात मैं इस किले के एक मन्दिर में अपने ज़िरह-बख्तर को रखकर पहरा दूंगा। अगर किसी ने हमला किया तो मैं उसे मार डालूंगा। सुबह तुम मुझे सरदार बना देना।"

सरायवाला बोला, "लेकिन मेरे किले में कोई मन्दिर नहीं। एक पानी की टंकी है। उसी पर तुम अपना बख्तर रख देना और पहरा देना। लेकिन तुम्हारे पास पैसे-वैसे हैं?"

"पैसे! पैसे की क्या जरूरत है? मैंने तो किसी किताब में यह नहीं पढ़ा कि कोई बहादुर सरदार अपने पास पैसे भी रखता है।"

"लेकिन पैसा तो जरूरी है। सीधी-सी बात है। भले ही किताबों में यह न लिखा हो, लेकिन सरदारों के पास न सिर्फ पैसों की एक थैली होनी चाहिए, बल्कि साथ में अपना एक नौकर भी होना चाहिए; और वक्त जरूरत पर काम आने के लिए मलहम की एक-आध डिब्बी भी रख लेनी चाहिए। किसी के साथ लड़ाई हो गई और चोट आ गई, तो मलहम की जरूरत

पड़ती ही है। है या नहीं ?"

डान क्विक्ज़ोट को उसका कहना ठीक मालूम हुआ। उसने इस राय के लिए धन्यवाद दिया। शाम हो गई थी। सराय के आंगन में पानी की एक टंकी थी। उसी पर अपना बतरूर वगैरह रखकर क्विक्ज़ोट पहरा देने लगा। उसके एक हाथ में एक लम्बा-सा भाला था और दूसरे में ढाल थी। बहुत चौकन्ना होकर वह पहरा दे रहा था।

रात मे कुछ गाड़ीवान सराय में ठहरे। एक गाड़ीवान का बैल पानी पीने के लिए टंकी के पास पहुंचा। उसे अपनी ओर आते देखकर डान क्विक्ज़ोट ने ललकार कर कहा, "खबरदार! कौन है ? यहां मत आना, वरना अपनी जान से हाथ धो बैठोगे!"

बैल के पीछे-पीछे उसका मालिक भी था। उसने सरायवाले से सब कुछ सुन रखा था। उसने उसकी बात की कोई परवाह नहीं की और आगे बढ़ आया। डान क्विक्ज़ोट को गुस्सा आ गया। उसने भाले से उस पर हमला कर दिया। गाड़ीवान घायल होकर बेहोश हो गया और वहीं गिर पड़ा।

थोड़ी देर बाद दूसरा गाड़ीवान अपने बैल को पानी पिलाने आया। इस बार भी डान क्विक्ज़ोट को गुस्सा आ गया। उसने उस पर भी हमला कर दिया। गाड़ीवान की चीख-चिल्लाहट सुनकर सराय में रहने वाले दूसरे लोग भी दौड़ पड़े। उन्होंने डान क्विक्ज़ोट पर पत्थर फेंकने शुरू कर दिए। वह एक बहादुर की तरह अपनी ढाल पर पत्थरों की मार सहता गया। अब वह चारों तरफ से घिरा हुआ था। उसने कल्पना की कि मैं एक बहुत बड़े युद्ध में भाग ले रहा हूं। उसे सराय के मालिक पर बड़ा गुस्सा आ रहा था। उसने मन में सोचा कि यह किसी नीच कुल का सरदार

है। इतने बड़े किले का मालिक होकर भी वह एक बहादुर का सम्मान नहीं कर पाता।

इतने में सराय वाले ने लोगों को समझाया कि यह तो पागल है, इसकी परवाह न करके घायल आदमी को अंदर ले जाना चाहिए और उसकी देखभाल करनी चाहिए। लोग घायल को अन्दर ले जाने लगे। तब सराय वाला डान क्विक्ज़ोट के पास आया और बोला, "हुज़ूर, आप इन लोगों की परवाह न करें। ये तो बेवकूफ़ हैं। मैं इनकी ओर से माफी मांगता हूं। लेकिन अब सारी रात अपने बख्तर का पहरा देने की जरूरत नहीं है। इतना ही काफी है। चलिए, मैं आपको सरदार बना देता हूं।"

यह सुनकर डान क्विक्ज़ोट बहुत खुश हुआ। सराय का मालिक अपने हिसाब की किताब ले आया और उसमें देखकर कुछ इस तरह गुनगुनाने लगा जैसे कोई मन्त्र पढ़ रहा हो। डान क्विक्ज़ोट घुटने टेककर उसके आगे बैठ गया। फिर सराय के मालिक ने एक पुरानी जंग लगी तलवार उसके सिर पर तीन बार घुमाई और उसके हाथ पर रख दी, और आशीर्वाद दिया, "भगवान आपको सदा विजयी बनाएं।"

अब क्विक्ज़ोट को सरदार का खिताब मिल चुका था। अब किस बात की देर थी! उसने फौरन अपना घोड़ा निकलवाया। सराय वाले और उसकी लड़कियों को शाही ढंग से आशीर्वाद दिया। फिर घोड़े को इतनी ज़ोर से दौड़ाया कि कुछ ही दूर आगे चलने पर घोड़ा हांफने लगा। क्विक्ज़ोट को याद आया कि सराय वाले ने एक नौकर साथ लेने के लिए कहा था। उसने फौरन अपना घोड़ा फिर से गांव की ओर मोड़ लिया।

सराय के मालिक ने डान क्विक्ज़ोट को सरदार का ख़िताब दिया।

3

कुछ दूर चलने पर डान क्विक्ज़ोट को किसी के रोने-चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी। उसने घोड़े को उसी ओर मोड़ दिया। कुछ दूर चलने पर उसने देखा कि एक पेड़ के साथ एक लड़का बंधा हुआ है और उसे एक आदमी छड़ी से पीट रहा है। लड़का ज़ोरों से चीख रहा था। डान क्विक्ज़ोट अपनी ही तरह सबको वीर योद्धा मानता था और उसी तरह लोगों से बात करता था। वह उस आदमी से बोला, "तुम्हारे जैसा बहादुर आदमी एक लड़के को इस तरह पीटे, यह कुछ शोभा नहीं देता! इसको क्यों बांधा है तुमने?"

वह आदमी इस हथियारबन्द सवार को देखकर डर गया और बोला, "सरदार! यह मेरा नौकर है! मेरी भेड़ चराता है। यह इतना लापरवाह है कि हमेशा किसी न किसी भेड़ को खो आता है, इसलिए मैं इसकी तनख्वाह काट लेता हूं। लेकिन फिर भी इसकी आदत नहीं सुधरती।"

डान क्विक्ज़ोट ने हुक्म दिया, "इस लड़के को फौरन छोड़ दो और इसके सारे पैसे लौटा दो। बता लड़के, इस पर तेरे कितने पैसे बाकी हैं!"

लड़के ने कहा, "हुज़ूर, हर महीने सात रुपये के हिसाब से नौ महीने के मेरे तिरसठ रुपये होते हैं!

वह आदमी मारे डर के कांपने लगा। उसने लड़के को छोड़

दिया और कहा, 'नहीं सरकार, यह झूठ बोलता है। मैंने इसे अब तक तीन जोड़ी जूते दिए हैं। एक बार यह बीमार पड़ गया था, तो मैंने इसके लिए वैद्य बुलवाया था। यह सारा खर्चा इसकी तनख्वाह से कटेगा।"

डान क्विक्ज़ोट ने उसे डांटकर कहा, 'चुप रहो! इसे पूरे के पूरे पैसे लौटा दो। तुमने मार-मार के इसे अधमरा कर दिया है।"

"लेकिन सरकार, मेरे पास यहां पैसे कहां हैं? मैं इसे घर ले जाकर सब पैसे दे दूंगा।"

डान क्विक्ज़ोट ने खुश होकर कहा, "ठीक है। लेकिन याद रखना, अगर तुमने इसके पैसे नहीं लौटाए तो बहुत बुरा होगा। मेरा गुस्सा बड़ा तेज है।"

उस आदमी ने डान क्विक्ज़ोट को सलाम किया और क्विक्ज़ोट आगे बढ़ा। यह सोचकर उसे बड़ी खुशी हो रही थी कि लोग अब उसका आदर ही नहीं करते थे, बल्कि उससे डरने भी लगे थे। तो लोगों ने उसे भी सरदार मान लिया। आज उसने एक दुखी आदमी की मदद की थी और इस तरह एक बहुत बड़ी जीत हासिल की थी। चलते-चलते वह एक चौराहे पर पहुंचा। वहां से चार रास्ते जाते थे। वह रुककर सोचने लगा कि किताबों में लिखा है कि बहादुर लोग ऐसे मौके पर खुद अपना रास्ता तय नहीं करते, बल्कि जिधर घोड़ा अपने आप चला जाता है उधर ही चल पड़ते हैं। यह सोचकर उसने घोड़े की लगाम ढीली कर दी। घोड़े ने उसके गांव का ही रास्ता लिया।

कुछ दूर चलने पर उसे कुछ लोग मिले। वे लोग व्यापारी थे और रेशम खरीदने के लिए शहर जा रहे थे। उनके साथ चार नौकर थे और तीन बैल वाले थे, जो सामान लादने के लिए उनके

साथ चल रहे थे। डान क्विक्ज़ोट ने सोचा कि ये लोग मुझसे युद्ध करने आ रहे हैं। उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया कि आज उसे अपनी बहादुरी दिखाने का मौका मिला। उसने अपना भाला संभाला और ढाल सामने करके लड़ाई के लिए तैयार हो गया।

जब वे लोग कुछ पास आए तो डान क्विक्ज़ोट ने अपने भाले से उनका रास्ता रोकते हुए कहा, "इस दुनिया में डेलसीनिया डेल टोबोसो सबसे ज्यादा सुन्दर लड़की है, इस बात को तुम लोग कबूल करते हो या नहीं?"

वे लोग इस अजीब-से आदमी को देखकर हैरत में रह गए। उन्हें विश्वास हो गया कि यह कोई पागल है। लेकिन उनमें से एक सौदागर को मज़ाक सूझा। बोला, "सरकार, हम लोग तो इस नाम की किसी लड़की को जानते ही नहीं, और न हमने यही सुना है कि वह बहुत सुन्दर है। एक बार उसे दिखा दीजिए, तब हम यह कबूल करेंगे कि वह सबसे सुन्दर है।

"चुप रहो!" डान क्विक्ज़ोट ने उसे डांटते हुए कहा, "तुम्हारी हिम्मत! उसे दिखा दूं, तब तुम कबूल करोगे कि वह सुन्दर है! इसमें नई बात क्या हुई? बिना देखे ही कबूल करना पड़ेगा! अगर नहीं करते हो, तो आओ, मुझसे लड़ लो! चाहो तो एक-एक करके आओ, और चाहो तो सब मिलकर लड़ लो!"

यह कहकर उसने अपना भाला संभाला और घोड़े को एड़ लगाई। लेकिन उसका घोड़ा वैसे ही बहुत मरियल था और इतनी दूर चलते-चलते थक चुका था। वह लड़खड़ा कर गिर पड़ा। डान क्विक्ज़ोट अपना भाला और ढाल लिए हुए मुंह के बल ज़मीन पर आ गिरा। उसने अपने ऊपर इतना जिरह-बख्तर लाद रखा था कि उसके वज़न के कारण उससे जल्दी उठते ही नहीं बना। वह ज़मीन पर-पड़ा-पड़ा ही उन्हें ललकारता रहा, "ठहरो-ठहरो,

डरपोको ? भागो मत ! मैं गिर पड़ा हूं, इसमें मेरा दोष नहीं, इस घोड़े का दोष है। लेकिन मुझे उठ जाने दो। मैं तुम्हें अभी मज़ा चखाता हूं।"

उसकी यह हालत देखकर सौदागर को हंसी आ गई। वे उसका मज़ाक बनाते हुए आगे बढ़ गए। लेकिन उनके एक नौकर को डान क्विक्ज़ोट पर बड़ा गुस्सा आ रहा था वह उसके पास आया और उसके हाथ से भाला छीनकर तोड़ डाला। भाले के टुकड़े से उसने डान क्विक्ज़ोट को खूब पीटा। फिर वह भी अपने मालिक के साथ लौट गया। मार खाकर डान क्विक्ज़ोट अधमरा हो गया, लेकिन फिर भी वह एक बहादुर की तरह उन्हें ललकारता रहा और हाथ-पैर पटकता रहा। फिर उसने उठने की कोशिश की, लेकिन मार के कारण उसका बुरा हाल था। उससे उठते नहीं बन रहा था।

इतने में उसके गांव का एक आदमी एक गधा लेकर उधर आ निकला। उसने डान क्विक्ज़ोट को ज़मीन पर पड़ा देखा। वह फौरन उसके पास गया और उसके मुंह की धूल झाड़ने लगा। उसने किसी तरह उसका ज़िरह-बख्तर निकालकर एक तरफ फेंका। फिर उसने डान क्विक्ज़ोट को उठाकर अपने गधे पर बैठाया। उसके टूटे हुए भाले और दूसरे हरबे-हथियार को उसने उसके घोड़े पर बांधा। फिर वह उसे गांव की ओर ले चला।

शाम होते-होते वह डान क्विक्ज़ोट के घर के पास पहुंचा। उस समय गांव का पादरी डान क्विक्ज़ोट के घर आया था और घर के लोगों से उसके अचानक गायब हो जाने के बारे में बातचीत कर रहा था।

कुछ देर बाद गांव का हज्जाम भी वहीं आ पहुंचा। डान क्विक्ज़ोट की नौकरानी कह रही थी, "आज छः दिन हो गए, मेरे

मालिक का कोई पता नहीं। उनकी ढाल, तलवार, उनका भाला और उनका ज़िरह-बख्तर भी गायब है। मुझे लगता है कि किताबें पढ़कर उनका दिमाग खराब हो गया है।"

"हां, कुछ यही बात है। मुझे भी यही लगता है, डान क्विक्ज़ोट की भतीजी ने कहा, "मेरे चाचा दिन-रात साहस और पराक्रम की कहानियां और बहादुरों के किस्से पढ़ा करते थे। बस हमेशा पढ़ते ही रहते थे। अक्सर मैंने उन्हें हवा में तलवार चलाते हुए देखा था। कभी-कभी वे कहा करते थे कि आज लड़ाई में मैंने चार राक्षसों को मार गिराया है। मुझे तब उनकी बात पर हंसी आती थी; लेकिन हाय, मुझे क्या मालूम था कि ये किताबें कभी उनका दिमाग ही खराब कर देंगी ! मैं इन सारी किताबों को जला डालूंगी !"

पादरी बोला, 'हां, तुम ठीक कहती हो, यही करना चाहिए। कल हम लोग उसकी सब किताबों को ढूंढ़ निकालेंगे और उन्हें नष्ट कर डालेंगे।"

इतने में वह आदमी डान क्विक्ज़ोट को लेकर वहां आ पहुंचा। उसने दरवाज़ा खटखटाया। सब लोग दौड़ते हुए आए। डान क्विक्ज़ोट को गधे पर औंधा पड़ा देखकर सब बुरी तरह घबरा गए। सबने पूछना शुरू किया, लेकिन वहां जवाब कौन देता; डान क्विक्ज़ोट बेहोश पड़ा था।

नौकरानी ने दौड़कर बिस्तर लगाया। फिर सब लोगों ने मिलकर डान क्विक्ज़ोट को उठाया और बिस्तर पर लिटा दिया। उसे होश आ गया। वह बोला, "अरे भाई, कोई खास बात नहीं है। मैंने एक बहुत बड़ी लड़ाई में हिस्सा लिया है। उसी में कुछ घायल हो गया हूं। लेकिन मैंने अपने दुश्मनों को वह सबक सिखाया है कि वे मुझे कभी नहीं भूलेंगे ! आह, मेरी कमर में बहुत दर्द है !"

सब लोग उसे घेरकर बैठ गए। थोड़ी देर में वह बोला, "लाओ, मुझे कुछ खाने को दो। फिर मुझे ज़रा आराम से सोने दो।"

4

दूसरा दिन हुआ। लेकिन अभी तक डान क्विक्ज़ोट की हालत ऐसी नहीं थी कि वह बिस्तर से उठ सके। लगता था, अभी दो-चार दिन उसे और बिस्तर में ही रहना था। सवेरे पादरी आया। उसने उस कमरे की चाभी ली जिसमें डान क्विक्ज़ोट की किताबें रखी थीं। घर के सब लोगों ने तय किया था कि डान क्विक्ज़ोट अपनी किताबों से फिर मिल सके, इससे पहले ही उसकी सारी किताबों को नष्ट कर दिया जाए। लगभग एक हज़ार मोटी-मोटी किताबें, और छोटी किताबों का तो कोई हिसाब ही न था।

हज्जाम एक-एक किताब उठाकर पादरी के हाथ में दे देता था। पादरी उसे देखकर डान क्विक्ज़ोट की भतीजी के हाथ में दे देता था। वह उसे नौकरानी के हाथ में देती थी और नौकरानी उसे खिड़की के नीचे आंगन में फेंकती जाती थी। लेकिन थोड़ी देर में पादरी किताबें देखते-देखते थक गया और फिर उसने बिना देखे ही सारी किताबों को घर से बाहर निकाल लाने का हुक्म दिया। बाहर किताबों का बड़ा भारी ढेर लग गया। फिर सबने

मिलकर उसमें आग लगा दी। डान क्विक्ज़ोट की सारी किताबें थोड़ी ही देर में भस्म हो गईं।

फिर पादरी ने कहा, "इस कमरे का दरवाज़ा ही चिन दिया जाए। डान क्विक्ज़ोट जब बीमारी से उठेगा तो ज़रूर अपने पढ़ने वाले कमरे में जाना चाहेगा। कमरे के दरवाज़े के आगे एक दीवार बना दो ताकि उसे कमरा न मिल सके।"

पादरी के कहने के अनुसार कमरे के दरवाज़े के आगे दीवार चिन दी गई। कुछ दिनों बाद डान क्विक्ज़ोट ठीक हो गया। बिस्तर से उठते ही उसने सबसे पहला काम यह किया कि वह अपने पढ़ने के कमरे की ओर चल दिया। लेकिन यह क्या! यहां तो कहीं कोई कमरा ही न था। वह पूरे घर में ढूंढ़ता फिरा, लेकिन उसे अपना कमरा कहीं मिला ही नहीं। जहां कमरा था वहां अब दीवार थी। किताबें कहां गईं? कमरा कहां गया? अन्त में उसने हारकर अपनी नौकरानी को आवाज़ दी और उससे पूछा, "मेरा पढ़ने वाला कमरा कहां गया?"

नौकरानी बोली, "सरदार, आपका कमरा तो एक राक्षस ले गया।"

तब तक उसकी भतीजी भी वहां आ गई। वह बोली, "नहीं, नहीं—राक्षस नहीं, एक जादूगर ले गया। कल रात मैंने उसको बादलों से उतरते देखा था। थोड़ी देर में वह घर में घुस आया और घर-भर में जैसे कोहरा घिर गया। जब कोहरा दूर हुआ तो मैंने देखा कि आपका कमरा गायब है। चाचाजी, वह कोई बहुत बड़ा जादूगर था।"

यह सुनकर क्विक्ज़ोट को बड़ा गुस्सा आया। वह बोला, "यह कोई मेरा नया दुश्मन पैदा हुआ है। खैर, वह मुझसे बचकर कहां जाएगा! मैं उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालूंगा!"

लगभग पन्द्रह दिन तक डान क्विक्ज़ोट अपने घर पर ही

रहा। उसका एक पड़ोसी था। उसका नाम था सैन्को पांजा। वह बहुत गरीब और मूर्ख भी था। डान क्विक्ज़ोट ने उसे ऐसी पट्टी पढ़ाई कि वह उसके नौकर की तरह उसके साथ जाने को तैयार हो गया।

डान क्विक्ज़ोट ने उससे कहा, "घबराओ मत, कुछ ही दिनों में मैं एक टापू पर कब्ज़ा करूंगा और तुम्हें उसका राजा बना दूंगा।"

सैन्को पांजा हाथ जोड़कर बोला, "हां साहब, मैं बहुत गरीब आदमी हूं। देखिए, अपनी बात भूलिएगा मत। पहला टापू जो भी आप जीतें वह मुझे ही दीजिएगा। मैं उसका राजा बनूंगा, मेरी स्त्री रानी बनेगी और मेरे बच्चे राजकुमार और राजकुमारी बनेंगे।"

"हां, हां, इसमें तो कोई शक ही नहीं है! यह तो हमेशा से होता आया है। सब बड़े-बड़े बहादुरों ने लड़ाई में देश जीते हैं और अपने नौकरों और मुसाहिबों को उनका राजा बनाया है। इसमें कोई नई बात नहीं है। लेकिन तुम सामान भरने के लिए एक थैला साथ में ले लेना।

"लेकिन, सरदार, मुझे ज्यादा चलने की आदत नहीं है। आप कहें तो मैं अपना गधा साथ ले लूं?"

डान क्विक्ज़ोट ने थोड़ी देर तक सोचा। यह तो किसी किताब में नहीं लिखा था कि सरदार का नौकर गधे पर बैठता हो। बहुत सोच-विचार के बाद उसने कहा, "देखो, भाई, अभी तो तुम अपना गधा ले लो। फिर जहां हमने एक-आध लड़ाई जीती कि हमारे पास घोड़े ही घोड़े हो जाएंगे। मैं तुम्हें एक घोड़ा दे दूंगा।"

अब दोनों ने यात्रा की तैयारी करनी शुरू की। पैसे पास में नहीं थे। घर की कुछ चीजें बेचकर थोड़े-से पैसे इकट्ठे किए। फिर एक रात को दोनों चुपचाप दुनिया फ़तह करने के लिए निकल पड़े। सवेरा होते-होते वे बहुत दूर पहुंच गए। रास्ते में दोनों बातें करते जाते थे। दोनों में इस बात पर बहस छिड़ी हुई थी कि जब किसी राज्य पर कब्जा किया जाएगा तो वहां इन्तज़ाम कैसे किया जाएगा। फिर यह सवाल उठा कि पहले ज़मीन पर चढ़ाई की जाए या जहाज़ में बैठकर किसी टापू को जीता जाए। इतने में डान क्विक्ज़ोट की नज़र एक हवाचक्की पर पड़ी।

वह बोला, "ईश्वर को धन्यवाद दो सैन्को! हमें अपनी बहादुरी दिखाने का मौका मिल गया। वह देखो, सामने राक्षस खड़े हैं! उन्हें मारकर हम लोग उनका धन लूट लेंगे। भाई, लड़ाई में तो यह सब होता ही है!"

सैन्को ने आश्चर्य से इधर-उधर देखा, लेकिन उसे राक्षस कहीं नज़र नहीं आए। सामने एक हवा-चक्की खड़ी थी और उसके बड़े-बड़े पंखे हवा में घूम रहे थे। वह बोला, "हुज़ूर, मुझे तो यहां कोई नहीं दिखाई देता!"

डान क्विक्ज़ोट ने गम्भीर चेहरा बनाते हुए कहा, "अरे, आंखें नहीं हैं तुम्हारी! सिर पर राक्षस चढ़े आ रहे हैं और तुम कहते हो यहां कोई नहीं है! वह लम्बे-लम्बे हाथ नहीं देख रहे हो? मैंने किताबों में पढ़ा है कि राक्षसों के हाथ दो-दो कोस लम्बे होते हैं।"

"सरकार, वह तो हवा-चक्की है। जिन्हे आप हाथ बता रहे हैं, वे तो उसके चार पंखे हैं। हवा आती है तब वे पंखे घूमते हैं, और तब चक्की चलती है और उसमें आटा पिसता है।"

लेकिन तब तक डान क्विक्ज़ोट राक्षसों से युद्ध करने की योजना बनाने लगा था। उसने सैन्को पांजा की यह बकवास

क्विक्ज़ोट राक्षसों से लड़ने को तैयार हो गया

पसन्द नहीं आई। उसे डांटते हुए उसने कहा, "तुम तो डरपोक हो, डरपोक ! लड़ाई से डरते हो। अलग खड़े हो जाओ। तुम्हें क्या पता कि लड़ाई किसे कहते हैं और बहादुर किसे कहते हैं। मैं तो पहले ही जानता था कि तुमसे लड़ते ही नहीं बनेगा। खैर, मैं अकेला ही काफी हूं।"

और सैन्को पांजा की किसी बात पर ध्यान दिए बिना ही डान क्विक्ज़ोट ने अपने घोड़े को एड़ लगा दी। घोड़ा दौड़ाते हुए और भाला ताने हुए वह हवा-चक्की के पास जा पहुंचा। पास आकर उसने ललकारा, "खड़े रहो डरपोको ! तुम तो इतने सारे हो और मैं अकेला हूं। फिर डरते क्यों हो ! आओ, एक-एक करके मुझसे निपट लो।"

तब तक तेज़ हवा आई और चक्की के पंखे तेज़ी से घूमने लगे।

डान क्विक्ज़ोट ने फिर ललकारा, "तुम लोगों के इतने हाथ हैं, लेकिन यह न समझना कि मैं इससे डर जाऊंगा। मैं तुम्हारे सारे हाथ काट डालूंगा।" यह कहकर उसने ज़ोर से अपना भाला चक्की के घूमते हुए एक पंखे में भोंक दिया। तड़ाक से भाला टूट गया और उसके टुकड़े नीचे आ गिरे। पंखे के धक्के से घोड़े के साथ क्विक्ज़ोट भी जमीन पर आ गिरा।

सैन्को पांजा दौड़ता हुआ पास आया और उसे उठाते हुए बोला, "हुज़ूर यह क्या हुआ ? मैंने तो पहले ही कहा था कि वह राक्षस नहीं है, हवा-चक्की है। कोई भी ऐसा आदमी, जिसका दिमाग सही सलामत है, इसे राक्षस नहीं कहेगा।"

"चुप रहो !" डान क्विक्ज़ोट ने चीखकर उसे डांटा और फिर कहा, "तुम्हें कुछ पता भी नहीं है कि राक्षस कई तरह का

रूप धरकर आते हैं ! जो राक्षस या जादूगर मेरे पढ़ने-लिखने का कमरा उड़ा ले गया है, यह उसी की करामात थी । वह मुझसे जलता है । दुनिया में मेरी प्रसिद्धि फैल रही है, यह उससे देखा नहीं जाता।

"हो सकता है साहब, लेकिन मेरी समझ में कुछ नहीं आता।" सैन्को पांजा ने अपने मालिक की धूल झाड़ी और उसे सहारा देकर किसी तरह फिर से घोड़े पर बैठाया। डान क्विक्ज़ोट को बड़ी चोट आई थी, लेकिन वह कुछ नहीं बोला। कहीं सच्चे बहादुर भी चोटों की परवाह करते हैं ?

5

अब फिर से दोनों आगे बढ़े। दोनों धीरे-धीरे बातें करते-करते चले जा रहे थे। इतने में रास्ते में उन्हें दो फकीर मिले। फ़कीर खच्चरों पर बैठे थे। उनके पीछे दो-तीन गाड़ी आ रही थी। गाड़ी में एक स्त्री बैठी थी। गाड़ी के पीछे दो तीन-घुड़सवार थे। यह सब देखकर डान क्विक्ज़ोट का जोश उमड़ने लगा। उसने हवा में घूंसा मारते हुए कहा, 'देख लो, सैन्को देख लो! मैं कह रहा था न! ये बदमाश किसी राजकुमारी को भगाकर ले जा रहे हैं। इन मूर्खों को इतना भी पता नहीं कि दुनिया का इतना बड़ा बहादुर लड़ाका डान क्विक्ज़ोट इनके सामने खड़ा

हुआ है !"

सैन्को पांजा ने अपना सिर खुजलाते हुए कहा, "हुजूर, यह आप क्या कह रहे हैं! यह तो फ़कीर मालूम होते हैं और वह गाड़ी और घुड़सवार भी कोई मुसाफिर मालूम होते हैं।"

डान क्विक्ज़ोट ने उसे डांटते हुए कहा, "मैंने तुम्हें एक बार कह दिया न कि हम बहादुरों की बातें तुम्हारी समझ में नहीं आएंगी। तुम्हें यह सब पता है क्या? मेरे जैसा बहादुर सामने खड़ा हो और ये राजकुमारी को भगा ले जाएं, यह कैसे हो सकता है?"

यह कहकर डान क्विक्ज़ोट अकड़कर बीच रास्ते में खड़ा हो गया। जब फ़कीर पास आए, उसने उन्हें ललकारते हुए कहा, "डरपोको, इस तरह राजकुमारी को भगाकर कहां ले जा रहे हो! छोड़ दो उसे, वरना तुम्हारी खैर नहीं। मैं तुम सबको मार गिराऊंगा और राजकुमारी को छुड़ा लूंगा।"

फ़कीर यह बात सुनकर आश्चर्य में पड़ गए। उन्होंने कहा, "तुम किस राजकुमारी की बात कर रहे हो, और कौन उसे भगा ले जा रहा है? हमें तो यह सब कुछ पता नहीं। पीछे की गाड़ी में कौन आ रहा है, यह भी हमें कुछ मालूम नहीं। हम तो अपने रास्ते चुपचाप चले जा रहे हैं।"

लेकिन तब तक डान क्विक्ज़ोट ने एक फ़कीर पर हमला कर दिया। वह वार बचाकर खच्चर से नीचे उतर आया। तब तक उसका दूसरा साथी मौका पाकर वहां से भाग निकला। डान क्विक्ज़ोट ने उसका पीछा करना चाहा, लेकिन तब तक दूसरा फ़कीर भी खच्चर पर चढ़कर दूसरी ओर भाग गया।

डान क्विक्ज़ोट बड़ा खुश हुआ। वह फौरन आगे बढ़कर गाड़ी के पास पहुंचा और उस स्त्री से बोला, "राजकुमारी, तुम्हें

भगा ले जाने वाले उन बदमाशों की मैंने क्या दुर्गति की यह तो तुमने देख ही लिया। तुम्हें अब डरने की जरूरत नहीं है। मैं खुद, डान क्विक्ज़ोट हूं। अब तुम आराम से अपने देश चली जाओ। लेकिन मेरा एक काम कर देना। अगर तुम्हें राजकुमारी डेलसीनिया मिले तो तुम उसे यह बताना मत भूलना कि मैंने किस तरह डाकुओं से तुम्हारी जान बचाई थी।"

लेकिन तब तक घुड़सवारों में से एक आदमी पास आया और डान क्विक्ज़ोट को डांटकर बोला, "कौन हो जी तुम? चलो, गाड़ी से दूर हटो!"

डान क्विक्ज़ोट को उसका यह व्यवहार बहुत गलत मालूम हुआ। वह बोला, "तुम कोई खानदानी बहादुर नहीं मालूम होते! कौन होते हो तुम? चलो, आगे बढ़ो! मुझे शायद पहचानते नहीं?"

घुड़सवार को गुस्सा आ गया। वह बोला, "क्या कहा तुमने, मैं खानदानी बहादुर नहीं हूं? अच्छा आओ, तुम्हें बताता हूं?"

लेकिन वह आदमी डान क्विक्ज़ोट पर हमला करे, उसके पहले ही उसने उसे खींचकर घोड़े से नीचे गिरा दिया। वह आदमी ज़मीन पर आ गिरा। डान क्विक्ज़ोट ने कहा, "बोलो, मुझसे माफी मांगते हो, या मैं तुम्हारा सिर उतार लूं!"

यह सुनकर गाड़ी में बैठी हुई ओरत घबरा गई और उसे छोड़ देने के लिए डान क्विक्ज़ोट से प्रार्थना करने लगी। डान क्विक्ज़ोट ने कहा, "बस, एक शर्त पर मैं इसे छोड़ सकता हूं। यह राजकुमारी डेलसीनिया के पास जाए और मेरी बहादुरी के बारे में उसे बताने का वचन दे।"

वह औरत इतना घबरा गई थी कि उसने बिना यह पूछे कि डेलसीनिया कौन है और कहां रहती है, उसकी बात मान ली। यह सुनकर डान क्विक्ज़ोट बहुत खुश हुआ। उसने उस आदमी को छोड़ दिया। वे लोग आश्चर्य से उसकी ओर देखते हुए वहां से आगे बढ़ं।

सैन्को यह सब देखकर अपने मालिक की बहादुरी से बहुत प्रभावित हुआ। उसने सोचा कि मेरे मालिक ने इन लोगों को हरा दिया है और हारे हुए आदमी के धन पर हमारा हक है। इसलिए उसने उस आदमी को रोक लिया

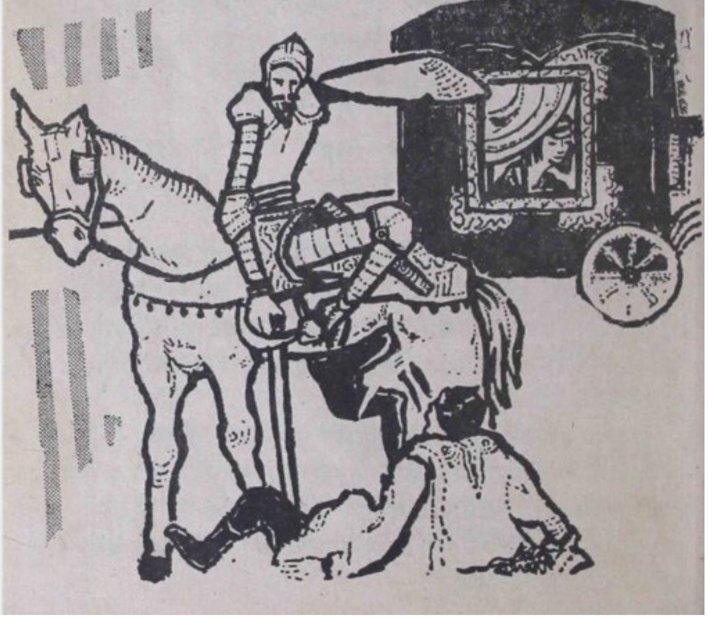

और उसके कपड़े उतारने शुरू किए, लेकिन तब तक वह आदमी यह अच्छी तरह समझ चुका था कि ये दोनों कुछ पागल मालूम होते हैं। उसने सैन्को को उठाकर ज़मीन पर पटक दिया और फिर घोड़ा दौड़ाता हुआ आगे बढ़ आया। सैन्को बेचारा किसी तरह धूल झाड़ता हुआ उठा और अपने मालिक के पास आया। डान क्विक्ज़ोट ने उससे कहा, "देखी मेरी बहादुरी! अरे, अब तो लोग मेरे नाम से कांपने लगे हैं। देखा नहीं तुमने, उन दोनों डाकुओं को मैंने कैसा भगाया! अच्छा तुम्हारे पास रोटी हो तो निकालो। थैले में है कुछ खाने का सामान?"

सैन्को ने कहा, "हुज़ूर, आप इतने बड़े बहादुर आदमी होकर ऐसी सूखी रोटी खाएंगे?"

डान क्विक्ज़ोट ने कहा, "अरे भाई, हम लोगों की न पूछो। रात-दिन लड़ते-भिड़ते रहते हैं, इसलिए खाने-पीने का कोई ठिकाना नहीं रहता। लाओ, जो कुछ है वही खा लेंगे। मैंने तो किताबों में पढ़ा है कि बहादुर लोग लड़ाई पर जाते थे तो कई-कई दिनों तक उन्हें खाना नहीं मिलता था।"

सैन्को ने अपने झोले से निकालकर उसे रोटी दी। रोटी खाकर दोनों आगे बढ़े। चलते-चलते वे एक जंगल में पहुंचे। यहां डान क्विक्ज़ोट ने कुछ देर आराम करने का निश्चय किया। उसने घोड़े को चरने के लिए छोड़ दिया। एक पेड़ की छाया में दोनों आराम करने लगे। घोड़ा चरता हुआ आगे निकल गया। वहां कुछ और घोड़े चर रहे थे। उन्होंने जब एक मरियल घोड़े को अपने पास चरते देखा तो उस पर हमला कर दिया। सबने लात मार-मारकर उसे दूर हटा दिया। कुछ ही दूर पर उन घोड़ों के मालिक बैठे थे। वे भी आ गए। उन्होंने भी डान क्विक्ज़ोट के घोड़े को पीटना शुरू किया।

डान क्विक्ज़ोट ने देखा तो उसे बड़ा बुरा लगा। उसने सैन्को से कहा, "ये लोग कोई चोर मालूम पड़ते हैं। कोई भी बहादुर किसी के घोड़े को इस तरह नहीं पीटता। चलो, ज़रा हम लोग इनकी खबर लें।"

"लेकिन सरकार, हम लोग तो सिर्फ दो ही आदमी हैं, और ये बहुत-से है। इनसे लड़ाई मोल लेना ठीक नहीं होगा।"

"अरे, चुप भी रहो, क्या डरपोकों की तरह बातें करते हो! मैं अकेला ही क्या किसी से कम हूं!" यह कहकर वह उन लोगों पर टूट पड़ा। लेकिन वे लोग बड़े तगड़े थे। सबने मिलकर डान क्विक्ज़ोट को पीटना शुरू किया। अपने मालिक को मार खाते देखकर सैन्को उसे बचाने गया, उसे भी खूब मार पड़ी। थोड़ी ही देर में दोनों घायल होकर गिर पड़े। पास ही डान क्विक्ज़ोट का घोड़ा भी गर्दन नीची किए खड़ा था।

जब वे चले गए, तो सैन्को ने बहुत दुःखी स्वर में कहा, "हुज़ूर, मुझसे तो यह सब नहीं सहा जाता। मुझे आप मेहरबानी करके छुट्टी दे दीजिए। मैं अपने घर जाना चाहता हूं। राज तो न मालूम कब मिलेगा। यहां तो मेरी जान निकली जा रही है!"

डान क्विक्ज़ोट बोला, "अरे भाई, इस बार तो मेरी ही गलती थी। ऐसे छोटे लोगों के साथ कोई बहादुर लड़ना पसन्द नहीं करता। यह तो मैं भूल ही गया था और भूल का फल ईश्वर ने दे ही दिया। वैसे बहादुरी में मैं किसी से कम नहीं हूं, लेकिन अब आगे से मैं कभी ऐसे हलके आदमियों के मुंह नहीं लगूंगा।"

किसी तरह सैन्को को उसने समझाया और आगे चलने के लिए राज़ी किया। लेकिन घोड़ा इस हालत में नहीं था कि उस पर सवारी की जा सके। इसलिए डान क्विक्ज़ोट भी सैन्को के

गधे पर बैठा। दोनों चल पड़े। डान क्विक्ज़ोट का घोड़ा भी साथ-साथ चल रहा था।

6

काफी दूर चलने के बाद वे लोग एक सराय के पास पहुंचे। सैन्को ने कहा, "इस सराय में कुछ देर आराम कर लिया जाए।"

"नहीं-नहीं, यह कोई सराय नहीं है, यह तो किसी का किला मालूम होता है।"

सैन्को बोला, "नहीं साहब, यह किसी का किला-विला नहीं है। यह तो एक छोटी-सी सराय है।"

किसी तरह वह डान क्विक्ज़ोट को सराय के दरवाज़े तक ले गया। वहां पहुंचते-पहुंचते डान क्विक्ज़ोट गिर पड़ा। सैन्को ने लपककर उसे उठाया। तब तक सराय में से भी कुछ लोग निकल आए। देखने पर पता चला कि डान क्विक्ज़ोट को काफी चोट आई है। उसे उठाकर सराय में ले जाया गया। सरायवाले की स्त्री बड़ी दयालु थी। उसने डान क्विक्ज़ोट की मरहम-पट्टी की। फिर दोनों को खाना दिया। खा-पीकर दोनों सो गए।

सवेरे तक डान क्विक्ज़ोट की हालत काफी अच्छी हो गई। उसने फिर से आगे बढ़ने के लिए अपना घोड़ा तैयार कर लिया। लेकिन तब तक सरायवाले ने आकर कहा, "भाई, पैसे तो देते

जाओ। खाने-पीने, रात में रहने और अपने घोड़े और गधे के दाने-पानी के पैसे दिए बिना ही जाना चाहते हो?"

डान क्विक्ज़ोट ने कहा, "किलेदार साहब, आपने मेरी सेवा की, इसके लिए मैं आपका उपकार मानता हूं। कभी आप पर कोई संकट पड़े तो मुझे याद करना न भूलना। मैं आपकी मदद के लिए फौरन चला आऊंगा। अव्वल तो मेरे जैसे बहादुर के रहते आप पर कोई संकट आएगा ही क्यों?"

सरायवाला बोला, "अरे जनाब, जब संकट पड़ेगा तो मैं खुद अपना कोई इन्तज़ाम कर लूंगा, मुझे आपकी मदद की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। अभी तो आप पैसे निकालिए।"

"तो शायद सचमुच मैंने गलती कर दी। क्या यह कोई सराय है? मैं तो इसे किला समझता था। खैर, लेकिन तुमको मुझसे पैसे नहीं लेने चाहिए। तुम तो जानते ही हो, लड़ाई में निकलने वाले सरदार अपने साथ पैसे लेकर नहीं चलते। पैसे साथ रखना हमारी शान के खिलाफ होता है। हमें जिस चीज़ की ज़रूरत पड़ती है, उसे हम वैसे ही ले लेते हैं, या अगर ज़रूरत हुई तो लड़-भिड़कर छीन लेते हैं। तुम भी अगर लड़ना चाहते हो तो आओ निपट लो।" यह कहकर वह लड़ाई के लिए तैयार हो गया।

सरायवाला यह देखकर डर गया। उसने डान क्विक्ज़ोट को छोड़ दिया। लेकिन उसने सैन्को को पकड़ लिया और उससे पैसे मांगे।

सैन्को ने जवाब दिया, "जब मेरे सरदार ने पैसे नहीं दिए, तो मैं क्यों दूं!"

सरायवाले को इस पर गुस्सा आ गया। उसने अपने आदमियों को बुलाकर सैन्को को पीटना शुरू किया। सैन्को

चीखने लगा। चीखें सुनकर क्विक्ज़ोट वापिस लौटा। सराय का दरवाज़ा बन्द हो चुका था। वे लोग अन्दर सैन्को को पीट रहे थे। अन्दर जाने का कोई रास्ता नहीं था। डान क्विक्ज़ोट सराय के पिछवाड़े गया। वहां एक जगह से थोड़ी दीवार टूटी हुई थी। उससे उसने अन्दर का हाल देखा। अपने नौकर को मार खाते देखकर उसे बड़ा गुस्सा आया। लेकिन वह कर ही क्या सकता था? उसने बाहर से ही उन लोगों को धमकाना और गालियां देना शुरू किया। लेकिन उन लोगों पर इसका कोई असर नहीं हुआ। उन्होंने सैन्को को अच्छी तरह पीटकर गधे पर बिठाया और सराय के बाहर निकाल दिया।

डान क्विक्ज़ोट ने अपने वफादार नौकर की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा, "कोई बात नहीं दोस्त, लेकिन गलती हमसे हो गई थी। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि यह मकान चाहे किला हो, चाहे सराय, लेकिन यह है किसी जादूगर या राक्षस का मकान। कोई भी भला आदमी तुम्हारे साथ इस तरह पेश नहीं आता और फिर मैंने जब तुम्हारी मदद को आने की कोशिश की तो इन लोगों ने जादू के बल पर मेरे आगे एक दीवार खड़ी कर दी। अब बताओ, इसमें मेरा या तुम्हारा क्या कसूर है?"

मार खाकर सैन्को अधमरा हो गया था। उससे बोलते भी नहीं बन रहा था। फिर भी किसी तरह उसने कहा, "सरकार, मेरी बात मानिए और घर लौट चलिए। हम लोग जहां भी जाते हैं, वहां हड्डी-पसली तुड़वाते हैं। अब आपको यह जादूगर या राक्षस की करतूत मालूम होती हो तो हो, लेकिन मैं अच्छी तरह जानता हूं कि ये लोग हमारे जैसे ही आदमी हैं। आगे भी ऐसे लोगों से पाला पड़ सकता है। अब मार खाने

की मुझमें ताकत नहीं है। और अब आपकी हालत भी ऐसी नहीं है कि किसी की मार सहन कर सकें। इसलिए चलिए, लौट चला जाए।"

डान क्विक्ज़ोट ने कहा, "मैं सब समझता हूं कि तुम क्यों इस तरह बातें कर रहे हो। यह सब उन जादूगरों की माया है। चलो, सब थोड़ी देर में ठीक हो जाएगा।"

7

इस तरह बातें करते हुए वे चले जा रहे थे। काफी दूर चलने पर सामने से धूल उड़ती नज़र आई।

डान क्विक्ज़ोट ने चौकन्ना होते हुए कहा, "अरे सैन्को, यह सामने क्या आ रहा है? मेरा ख्याल है कि यह सामने कोई बहुत बड़ी फौज चली आ रही है। यह धूल घोड़ों के दौड़ने से ही उड़ रही है।"

सैन्को ने दूसरी ओर इशारा करते हुए कहा, "हां, सरकार, कुछ ऐसा ही लगता है।"

डान क्विक्ज़ोट ने उस तरफ देखते हुए कहा, "अरे हां, यह तो उधर से भी कोई भी फौज आती हुई दिखाई देती है। लगता है हम लोगों को चारों तरफ से घेरा जा रहा है। आज यहां जमकर लड़ाई होगी। सैन्को, तुम देख लेना, आज मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि एक बहादुर सरदार किस तरह अपने दुश्मनों के

छक्के छुड़ाता है। विश्वास मानो, आज की लड़ाई दुनिया के इतिहास में मेरा नाम अमर कर देगी!"

दोनों एक छोटे-से टीले के ऊपर चढ़ गए और वहां से देखने लगे। सामने और दाहिनी तरफ से कुछ धूल उड़ रही थी। डान क्विक्ज़ोट यह देखकर बहुत खुश था। सचमुच ही उसका विश्वास था कि आज दो फौजों से टक्कर लेनी है। वह एक बहादुर की तरह अकड़कर अपने दुबले-पतले घोड़े पर बैठा था। वह सोच रहा था कि खुद कहां खड़ा होगा और सैन्को को कहां खड़ा करेगा। उसने एक-एक सिपाही को मार गिराने की योजना बनाई

डान क्विक्ज़ोट भेड़ों की पल्टन से लड़ने लगा

थी। लेकिन असलियत यह थी कि दोनों ओर से दो गड़रिए अपनी भेड़ें लेकर लौट रहे थे। भेड़ों के चलने से ही धूल उड़ रही थी। थोड़ी देर बाद सैन्को बोला, "हुजूर, मुझे तो कोई फौज दिखाई नहीं देती। मुझे तो कुछ काली-सी चीज़ हिलती-डुलती नज़र आ रही है।"

डान क्विक्ज़ोट गुस्से में भरकर बोला, सैन्को, तुमसे बढ़कर बेवकूफ आदमी मैंने आज तक नहीं देखा। सिर पर फौज चली आ रही है और तुम कहते हो, कोई काली-काली चीज़ नज़र आती है। अब तुम लड़ाई के लिए तैयार हो जाओ। ऐसी लड़ाई आज तक न कभी हुई है और न कभी होगी, समझे!"

सैन्को बोला, "नहीं साहब, मुझे तो शक हो रहा है। मुझे तो कुछ भेड़ों की आवाज़ सुनाई दे रही है। हो न हो, यह भेड़ों का झुंड ही है।"

डान क्विक्ज़ोट बोला, "तुम पागल तो नहीं हो गए हो!"

तब तक भेड़ें सामने आ गईं। डान क्विक्ज़ोट ने घोड़े को एड़ लगाई और चिल्लाता हुआ उन पर टूट पड़ा। भेड़ें अड़ गईं। डान क्विक्ज़ोट ने अपने भाले से एक भेड़ को मारना चाहा, लेकिन तब तक सन्न करता हुआ एक पत्थर आकर उसकी छाती में लगा। गड़रिये ने उस पर पत्थर फेंकना शुरू किया। डान क्विक्ज़ोट को इसकी आशा नहीं थी। पत्थर से उसे चोट लगी। लेकिन उसने समझा कि फौजों ने ज़ोर-ज़ोर से उस पर हमला कर दिया है। उसने आगे बढ़ते हुए भाला घुमाया और अपने पीछे खड़े सैन्को को भी आगे बढ़ने के लिए ललकारा। सैन्को ने उसे बहुत मना किया। तब तक दूसरा पत्थर आकर उसे लगा। और फिर तीसरा पत्थर सिर पर लगा और वह घोड़े से नीचे आ गिरा। लेकिन ज़मीन पर पड़े-पड़े भी वह ललकारता रहा, "अरे, डरपोको, ज़रा बहादुरों की तरह लड़ो! इस तरह चोरी से पत्थर

क्यों फेंकते हो ? हिम्मत हो तो सामने आकर लड़ो !"

और उसने एक भागती हुई भेड़ को टांग से पकड़कर ज़मीन पर दबोच दिया। तब तक एक गड़रिया उसके पास आ गया था। उसने अपनी छड़ी से डान क्विक्ज़ोट के हाथ पर वार कर दिया। उसने भेड़ को छोड़ दिया। गड़रियों ने समझा कि यह कोई पागल मालूम होता है। वे उसे गालियां देते हुए अपनी भेड़ों को आगे हांक ले गए और अपने रास्ते चले गए।

8

सैन्को पांजा ने पास आकर अपने मालिक को उठाया। उसकी धूल झाड़ते हुए उसने कहा, "देखा न साहब, मैं तो पहले ही कहता था कि यह कोई फौज वगैरह नहीं है, भेड़ें हैं। लेकिन आपने मेरी मानी नहीं। वह तो गड़रियों ने छोड़ दिया, वरना आज बड़ी मुसीबत होती।"

डान क्विक्ज़ोट ने उसे डांटते हुए कहा, "तुम्हें कभी अकल नहीं आएगी ! ये सब सिपाही थे। यह तो मेरे दुश्मन थे, किसी जादूगर ने इन्हें भेड़ की शक्ल दे दी थी। वे लोग आज मुझे घेरकर मारना चाहते थे। अगर मैंने इन्हें भगा नहीं दिया होता तो आज तुम्हारी भी खैर नहीं थी।"

अब फिर वे आगे बढ़े। धीरे-धीरे चलते थे और बातें करते

जाते थे। कुछ दूर चलने पर उन्हें एक गाड़ी आती दिखाई दी। गाड़ी पर राज्य का झंडा फहरा रहा था। गाड़ी अभी काफी दूर थी। लेकिन डान क्विक्ज़ोट ने सोचा कि फिर कोई मौका अपनी बहादुरी दिखाने का मिलने वाला है। उसने सैन्को से कहा, "लो सैन्को, यह कोई रथ आ रहा है और इस बार लगता है कि किसी राज्य का राजा खुद अकेले मुझसे लड़ना चाहता है। मैंने अक्सर किताबों में पढ़ा है कि जब कोई राजा हारने वाला होता है और उसकी फौज उसका साथ छोड़ देती है तो वह अकेले ही लड़ाई के मैदान में उतर आता है। उसके मरने के बाद राज जीतने वाले को मिलता है। आज मैं बहुत खुश हूं। आज भाग्य ने मेरा साथ दिया है, बहुत जल्द ही मुझे एक राज मिलने वाला है !"

इतने में उधर से एक दही बेचने वाला निकला। उसे देखकर डान क्विक्ज़ोट बोला, "लो शुभ-शकुन भी होने लगे। मैंने किताबों में पढ़ा है कि लड़ाई पर जाने से पहले लोग दही खाया करते हैं। आओ, कुछ दही ले लिया जाए।"

उसने अपना टोप उतारकर उसी में थोड़ा-सा दही खरीदा। लेकिन उसे दही खाने का मौका नहीं मिला। रथ अब पास आ रहा था। सैन्को ने कहा, "साहब, देखिए, यह कोई सरकारी गाड़ी मालूम पड़ती है। इस पर राज का झंडा उड़ रहा है, इससे लड़ाई मोल लेना ठीक नहीं है। आप इससे दूर ही रहें।"

तब तक रथ और पास आ गया। लड़ाई की तैयारी करनी थी, डान क्विक्ज़ोट के हाथ में अपना टोप था जिसमें दही भरा था, उसने जल्दी में टोप अपने सिर पर रख लिया। उसके चेहरे से दही के रेले बह निकले। वह घबरा गया। उसने सैन्को से पूछा, "सैन्को, यह क्या हुआ ? मेरा दिमाग गलकर बह रहा है या मुझे पसीना छूट रहा है ! अगर पसीना छूट रहा हो तो यह समझना

डान क्विक्ज़ोट के डर से शेर पिंजड़े से बाहर नहीं निकला

कि मैं डर गया हूं। लाओ, अगर कोई कपड़ा हो तो दो, मैं अपना मुंह पोंछ लूं।"

सैन्को ने एक कपड़े का टुकड़ा उसे दिया। उसने मुंह पोंछा और वह फिर तैयार होकर घोड़े पर बैठ गया। इतने में गाड़ी आ पहुंची। क्विक्ज़ोट ने रास्ता रोककर गाड़ीवाले से पूछा, "क्यों

जी, इसके अन्दर कौन है? वह बाहर क्यों नहीं निकलता? उसे बाहर निकालो! मैं उससे लड़ूंगा।"

वह आदमी बोला, "अरे साहब, इसके अन्दर शेर का पिंजड़ा है। हमारे देश के राजा को एक सरदार ने भेंट किया है। हम लोग उनके पास ले जा रहे हैं। आप रास्ते से हट जाइए।"

डान क्विक्ज़ोट को यह सुनकर एक नई बात सूझी। उसने पूछा, "अच्छा यह बताओ, शेर काफी तगड़ा है न?"

"तगड़ा! हाल ही में अफ्रीका के जंगल से पकड़कर लाया गया है। बड़ा खूंखार शेर है। उसे भूख लगी है। आप रास्ते से हट जाइए। हम कुछ दूर आगे जाकर उसे खाना देंगे।"

"ज़रा अपने शेर को बाहर तो निकालो, मैं इसे बताना चाहता हूं कि मैं कौन हूं!"

वह आदमी घबराया। उसके साथ दो आदमी और थे जो शेर के रखवाले थे। वे भी बाहर निकल आए और डान क्विक्ज़ोट को अलग हटने के लिए समझाने लगे। लेकिन डान क्विक्ज़ोट और भी अड़ गया। उसे लगा कि ये लोग बेवकूफ हैं, या हो सकता है कि इनका शेर बहुत डरपोक हो और वह मुझसे लड़ना नहीं चाहता हो। उसकी हिम्मत और बढ़ गई। वह बोला, "नहीं, अपने शेर को तुम्हें बाहर निकालना ही पड़ेगा। मैं उससे लड़े बिना रास्ता नहीं छोड़ूंगा।"

वे लोग बहुत घबराए, लेकिन अब उनके सामने और कोई चारा नहीं था। उनमें से एक आदमी शेर के पिंजड़े पर चढ़ गया और बाकी सब वहां से अलग हो गए। सैन्को ने अपने मालिक को रोकने की बहुत कोशिश की, लेकिन उसने उसे भी डांटकर दूर कर दिया। सब लोग अलग खड़े होकर तमाशा देखने लगे। उस आदमी ने पिंजड़े का दरवाज़ा थोड़ा ऊंचा कर दिया। लेकिन शेर को शायद नींद लगी हुई थी या वह क्विक्ज़ोट जैसे

आदमी से लड़ना नहीं चाहता था। पता नहीं क्या हुआ, वह अपनी जगह से उठा ही नहीं।

डान क्विक्ज़ोट ने उस आदमी से कहा, "इसे बाहर निकालो!"

वह बोला, "साहब, इस समय इसकी इच्छा नहीं है। अगर इसे बहुत तंग करेंगे तो अभी यह हम दोनों को फाड़ खाएगा। इसे अन्दर ही रहने दीजिए।"

डान क्विक्ज़ोट ने कहा, "तो ठीक है, मुझे एक प्रमाणपत्र लिख दो कि मैंने आज एक शेर को लड़ाई में हराया है। मुझे देखकर उसको पिंजड़े से बाहर निकलने की हिम्मत ही नहीं हुई!"

वह आदमी किसी तरह डान क्विक्ज़ोट से पिंड छुड़ाना चाहता था। उसने डान क्विक्ज़ोट के कहने के अनुसार एक कागज पर लिख दिया। फिर डान क्विक्ज़ोट ने छाती फुलाकर सैन्को और दूसरे लोगों को पास बुलाया और अपनी बहादुरी की खुब डींग हांकी। उसने उन लोगों से कहा, "जाओ, अपने राजा से कहना कि आज मैंने एक शेर को लड़ाई में हराया है। आज से मेरा नाम शेरों का सरदार हुआ!"

वे लोग आगे बढ़ गए। डान क्विक्ज़ोट भी खुशी-खुशी सैन्को के साथ आगे चला। रास्ते में डान क्विक्ज़ोट ने सैन्को को बताया कि किस तरह शेर भागकर पिंजड़े में घुस गया। सैन्को अपने मालिक की इस बहादुरी को देखकर बहुत प्रभावित था।

9

इसी तरह चलते-चलते और अपनी बहादुरी दिखाते हुए दो दिन बीत गए। रास्ते का कहीं अन्त नहीं था, क्योंकि डान क्विक्ज़ोट हमेशा घोड़े की लगाम ढीली ही रखता था और घोड़ा जिधर उसका मन आता था उधर चलता था। कुछ दूर चलने पर उन्होंने सामने एक आदमी को आते देखा। उसके सिर पर कुछ चमक रहा था। डान क्विक्ज़ोट ने किताबों में पढ़ा था कि स्पेन के एक पुराने बादशाह का मुकुट चोरी चला गया था, जिसे उसकी सेना के एक सरदार ने चुरा लिया था। डान क्विक्ज़ोट ने सोचा कि शायद यह वही सरदार है और चुराया हुआ मुकुट लगाकर कहीं भाग रहा है।

असल में बात यह थी कि एक आदमी कहीं से पीतल की एक पतीली खरीदकर आ रहा था। रास्ते में पानी बरसने लगा तो उसने अपनी पगड़ी भीगने से बचाने के लिए पतीली को सिर पर रख लिया था। वही चमक रही थी।

डान क्विक्ज़ोट ने आगे बढ़कर उस आदमी को भाला दिखाकर रोक लिया और कहा, "इस मुकुट को लौटा दो, नहीं तो मेरे साथ लड़ने को तैयार हो जाओ!"

वह आदमी घबराया। एक हथियारबन्द आदमी को देखकर उसकी हिम्मत छूट गई। वह खच्चर से कूदकर अपनी जान बचाकर भाग निकला। लेकिन भागने से पतीली उसके सिर से गिर

पड़ी। डान क्विक्ज़ोट ने सैन्कों को मुकुट उठा लाने का हुक्म दिया। पतीली लाकर अपने मालिक को देते समय सैन्को हंस पड़ा।

उसे हंसते देखकर डान क्विक्ज़ोट ने कहा, "तुम हंस क्यों रहे हो? लगता है, जिस राजा के लिए मुकुट बनवाया गया था उसका सिर बहुत बड़ा था। इसलिए यह मेरे सिर पर भी ठीक से बैठता नहीं है।" उसने पतीली को अपने सिर पर रखने की कोशिश करते हुए कहा।

"सरकार, यह कोई मुकुट नहीं है। इसे मत पहनिए। जो देखेगा वही हंसेगा। यह पतीली है।"

"तुम्हें पता क्या है! पहले-पहल यह मुकुट जिसके हाथ आया होगा, उसने इसका सोना निकलवा लिया होगा और पीतल का बनवा दिया होगा। खैर, इसकी कोई चिन्ता नहीं। आगे किसी शहर में पहुंचकर हम लोग सबसे पहले इसे ठीक कराएंगे।"

सैन्को पांजा बोला, "अच्छा साहब, यह बताइए कि इस खच्चर का क्या किया जाए? इसे छोड़कर वह आदमी भाग गया। आप कहें तो इसे मैं ले लूं। मेरा गधा इतनी दूर चलकर बहुत थक गया है।"

"भाई, इस चीज़ के बारे में मैंने आज तक किसी किताब में नहीं पढ़ा। इसलिए मैं इस मामले में तुम्हें कोई राय नहीं दे सकता। हां, अगर जरूरत हो तो अपने गधे से तुम इसे बदल सकते हो!"

सैन्को ने अपने गधे को वहां से दूर खदेड़ दिया और उस आदमी के खच्चर पर अपना सामान लाद लिया। उस पर कुछ खाना भी बंधा था, जिससे दोनों ने भरपेट भोजन किया और फिर आगे बढ़े।

10

रास्ते में सैन्को बोला, "हुजूर, अगर इजाजत हो तो मैं एक बात कहूं। आप इस तरह जंगल में अपनी बहादुरी दिखाएंगे तो इससे क्या मिलेगा? किसी राजा की फौज पर हमला कीजिए तो दुनियाभर में आपका नाम फैल जाएगा और इतिहास में आपको हमेशा याद भी किया जाएगा।"

"तुम्हारी बात तो ठीक लगती है; लेकिन मैंने दूसरी ही योजना बनाई है। मैं इस तरह सबसे पहले बहादुरी के दूसरे काम करके चारों ओर अपनी प्रसिद्धि फैला देना चाहता हूं। जब मेरी बहादुरी की बात किसी राजा के कान तक पहुंचेगी तो वह मेरा स्वागत करेगा। मुझे अपने दरबार में आदर के साथ बैठाएगा, अच्छा खाना खिलाएगा और राजकुमारी के साथ मेरी शादी कर देगा। अगर राजकुमारी की दासियां होंगी तो उनमें से किसी के साथ तुम्हारी शादी हो जाएगी।"

सैन्को खुश होकर बोला, "हां साहब, यही मैं कहने जा रहा था। कुछ इसी तरह का इन्तज़ाम कीजिए जिससे आपको भी फायदा हो और मुझे भी।"

"हां, मैं राजा बन जाऊंगा और तुम्हें अपना सरदार बना लूंगा। लोग मुझे महाराज और तुम्हें सरदार कहेंगे।"

इसी तरह बातें करते हुए दोनों चले जा रहे थे। रास्ते में उन्हें कुछ कैदी मिले, जिन्हें सिपाही बांधकर कहीं ले जा

डान क्विक्ज़ोट ने कैदियों को छुड़वाया

रहे थे। कैदियों के गले में ज़ंजीरें पड़ी थीं और उन्हें एक-दूसरे के साथ बांध दिया गया था। उनके साथ दो घुड़सवार भी थे और दो-तीन हथियारबन्द सिपाही पीछे-पीछे चल रहे थे।

सैन्को ने अपने मालिक से कहा, "सरकार, ये कैदी हैं। इन्हें राजा ने सज़ा दी है। अब इन्हें काम करने के लिए ले जाया जा रहा है।"

डान क्विक्ज़ोट को इन कैदियों पर दया आ गई। वह बोला, "हर आदमी को ईश्वर ने स्वतंत्र पैदा किया है। राजा को इस तरह किसी को सज़ा देने का हक नहीं है। इनसे ज़बरदस्ती काम लिया जाएगा, यह अन्याय है। इनकी मदद करना मेरा फर्ज़ है।' यह कहकर वह आगे बढ़ गया और एक घुड़सवार को रोककर

उसने पूछा, "क्यों जी, इन लोगों को इस तरह क्यों ले जा रहे हो? इन्होंने क्या अपराध किया है?"

"तुम खुद इनसे पूछ लो न?" घुड़सवार ने उत्तर दिया।

डान क्विक्ज़ोट ने कैदियों के पास जाकर उनसे सब कुछ पूछा और कहा, "लेकिन तुम लोगों ने ऐसा कोई अपराध तो किया नहीं कि तुम्हें ऐसी कड़ी सज़ा मिले। चलो, मैं तुम्हारी मदद करता हूं। मेरा हुक्म है कि तुम्हें छोड़ दिया जाए। लेकिन इसके बाद तुम्हें कायदे से रहना पड़ेगा।"

तब तक एक घुड़सावार ने उससे कहा, "राजा के कैदियों को छोड़ने का हुक्म देने वाले तुम कौन होते हो? चलो, चुपचाप अपना रास्ता लो!"

"डान क्विक्ज़ोट को गुस्सा आ गया। वह बोला, "मैं कौन हूं, यह तुम्हें पता नहीं? मेरा नाम डान क्विक्ज़ोट है और मैं एक बड़ा वीर सरदार हूं। दुखियों की मदद करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं।" यह कहकर वह घुड़सवार पर टूट पड़ा। घुड़सवार इस तरह से अचानक होनेवाले हमले के लिए तैयार नहीं था। वह घायल होकर नीचे गिर पड़ा। उसके दूसरे साथी भी घबरा गए। कैदी भी भागने का रास्ता देख रहे थे। उन्होंने ज़ंजीरें खोलने की कोशिश की। सैन्कों ने भी उनकी मदद की। थोड़ी देर में कैदी आज़ाद हो गए। उन्होंने मिलकर सिपाहियों के हथियार छीन लिए। फिर उन्होंने सिपाहियों को मार भगाया।

डान क्विक्ज़ोट ने कैदियों से कहा, "देखो भाई, मैंने तुमको आज़ाद कराया है। इसलिए तुम्हें मेरा एक काम करना होगा। जिस ज़ंजीर से तुम लोग बंधे थे, उसे लेकर तुम लोग राजकुमारी डेलसीनिया के पास जाओ और उसे बताओ कि मैंने किस तरह अपनी बहादुरी से तुम लोगों को आज़ाद कराया है। फिर उनकी

आज्ञा लेकर तुम जहां चाहो जा सकते हो ?"

यह सुनकर कैदियों का सरदार बोला, "हम लोग शहर में नहीं जाएंगे। वहां हमें फिर पकड़ लिया जाएगा।"

डान क्विक्ज़ोट को उनकी इस गुस्ताखी पर बड़ा गुस्सा आया। उसने चीखकर कहा, "क्या कहते हो ? मैंने तुम लोगों को छुड़वाया है और तुम लोग उसका बदला इस तरह चुकाना चाहते हो ! खैर, कोई बात नहीं। अगर तुम सब नहीं जा सकते हो तो एक आदमी ही चला जाए। लेकिन तुम्हें मेरा काम तो करना ही पड़ेगा, वरना मैं एक-एक की यहीं खबर लूंगा !"

कैदियों के सरदार को अब तक मालूम हो गया था कि यह आदमी कैसा है। उसने अपने साथियों को इशारा किया और सब पत्थर फेंकते हुए भाग निकले। डान क्विक्ज़ोट ने सैन्को से कहा, "खराब आदमियों की मदद करना नेकी करके कुएं में डालने के बराबर है।"

सैन्को बोला, "साहब, मैंने तो आपसे पहले ही कहा था कि इस तरह के कामों में आपको हाथ नहीं डालना चाहिए। अब थोड़ी देर में वे सिपाही भी दूसरे सिपाहियों को साथ लेकर यहां आ पहुंचेंगे। तब हमारा बचना बड़ा मुश्किल होगा।"

डान क्विक्ज़ोट खुद भी डर रहा था। पास में ही एक छोटी-सी पहाड़ी थी, जिस पर घना जंगल था। उसे देखकर डान क्विक्ज़ोट को एक बात सूझ आई। वह सैन्को को लेकर पहाड़ी की ओर भाग गया।

11

दूसरे दिन उसने सैन्को से कहा, "सैन्को, मेरा एक काम करोगे ? मेरी एक चिट्ठी तुम राजकुमारी डेलसीनिया को दे आओ। मैं कुछ दिन यहां रहूंगा और उसके लिए तप करूंगा। किताबों में मैंने पढ़ा है कि तप करने से आदमी की मनोकामना बहुत शीघ्र ही पूरी होती है।"

सैन्को पांजा जानता था कि डेलसीनिया नाम की कोई राजकुमारी नहीं है, और अगर है भी तो डान क्विक्ज़ोट का उससे कोई मतलब नहीं, लेकिन बहुत दिनों से उसने भरपेट भोजन नहीं किया था। वह कुछ दिन कहीं रहकर अच्छी तरह खाना-पीना और आराम करना चाहता था। इसलिए वह राज़ी हो गया। अपने मालिक की चिट्ठी लेकर और उसके घोड़े पर सवार होकर वह अपने गांव की ओर चल पड़ा।

चलते-चलते वह उसी सराय के पास पहुंचा जहां वह अपने मालिक के साथ एक बार मार खा चुका था। सराय में जाते हुए उसे डर लग रहा था, लेकिन वहां ठहरे बिना और कोई उपाय ही न था, क्योंकि अभी बहुत लम्बा सफर बाकी था। वह डरते-डरते अन्दर घुसा। लेकिन दरवाज़े में ही उसे अपने गांव के दो आदमी मिल गए, हज्जाम और पादरी। दोनों डान क्विक्ज़ोट की खोज में निकले थे। सैन्को को देखकर वे बहुत खुश हुए और बोले, "ओ हो, सैन्को ! तुम कहां से आ निकले ? तुम्हारा सरदार

कहां है ?"

सैन्को बोला, "वे एक जरूरी काम से पीछे रुक गए हैं। मुझे एक खास काम के लिए उन्होंने आगे भेजा है।" उसने असली बात छिपा ली।

A-537593

लेकिन पादरी ने कहा, "मुझे लगता है तुम झूठ बोल रहे हो। तुमने उसे मारकर कहीं फेंक दिया है, और उसका घोड़ा तुमने छीन लिया है।"

उसकी यह बात सुनकर सैन्को घबरा गया। उसने फौरन सही-सही बता दिया। डेलसीनिया का नाम सुनकर दोनों बड़े चक्कर में पड़े। उन्होंने वह चिट्ठी दिखाने के लिए कहा जो डान क्विक्ज़ोट ने उसे दी थी। लेकिन चिट्ठी उसके पास निकली ही नहीं। उसने कहा कि पता नहीं कि मैं उसे कहीं भूल आया, या क्विक्ज़ोट ने उसे दिया ही नहीं। फिर उसने बताया कि मेरे मालिक दुनिया के बादशाह, या नहीं तो कम से कम अपने देश के राजा होने वाले हैं। वे किसी राजकुमारी के साथ शादी करेंगे और मेरी शादी राजकुमारी की दासी के साथ होगी। मुझे सरदार बनाया जाएगा।"

पादरी और हज्जाम अब इस बात पर विचार करने लगे कि डान क्विक्ज़ोट को किस तरह घर लाया जाए? अचानक उन्हें एक चाल सूझ आई। उस सराय में डोरोथिया नाम की एक स्त्री भी ठहरी थी। उन्होंने उसे कुछ दे-लेकर इस बात के लिए राज़ी कर लिया कि वह उनकी मदद करेगी। फिर उन्होंने सैन्को को बताया, "यह एक राजकुमारी है। इसके राज को एक राक्षस उड़ा ले गया है। इसने तुम्हारे सरदार की बहादुरी के किस्से सुने हैं और अब यह उनसे मदद मांगने आई है। इसे तुम अपने मालिक के पास ले जाओ।"

सैन्को बोला, "मैं एक शर्त पर इसे ले जा सकता हूं। तुम

लोगों का मेरे मालिक से कहना होगा कि मैंने उनकी चिट्ठी राजकुमारी डेलसीनिया तक पहुंचा दी है।"

वे लोग राज़ी हो गए। वह उन्हें उस पहाड़ी पर ले आया, जहां डान क्विक्ज़ोट रहता था। डोरोथिया उसके पास पहुंची और उसके पैरों में माथा टेककर अपनी विपत्ति सुनाने लगी, "जब तक आप मेरी मदद के लिए तैयार नहीं होंगे, मैं यहां से हटूंगी नहीं!"

डान क्विक्ज़ोट को उस पर दया आ गई। तब तक सैन्को भी पास आया और उसने भी अपने मालिक को बताया कि यह राजकुमारी बड़ी दुखी है और इसके राज को राक्षस उड़ा ले गए हैं।"

डान क्विक्ज़ोट ने राजकुमारी को वचन दिया और कहा, "चलो, लड़ाई की तैयारी की जाए। अब देर करना ठीक नहीं होगा। सैन्को, मेरा ज़िरह-बख्तर लाओ और रोज़ीनांट को तैयार करो ?"

हज्जाम नकली दाढ़ी लगाकर राजकुमारी के दास की तरह पास ही खड़ा था। लेकिन पादरी ज़रा दूर खड़ा था। उसे पहचान कर डान क्विक्ज़ोट बोला, "ओ हो, पादरी साहब! आप यहां कैसे ?"

पादरी बोला, "मुझे कुछ लुटेरों ने लूट लिया है। मैं आपसे मदद मांगने आया हूं।"

डान क्विक्ज़ोट ने उसे भी मदद देने का वायदा किया। रास्ते में डान क्विक्ज़ोट ने राजकुमारी को धीरज बंधाने की कोशिश की। चलते-चलते एक जगह उन्हें एक लड़का मिला। वह बोला, "हुज़ूर, आपने मुझे नहीं पहचाना ? मैं वही हूं, जिसे उस दिन आपने छुड़वाया था, वरना वह जमींदार पीटते-पीटते मेरी जान ही ले लेता।"

डान क्विक्ज़ोट ने उसे पहचान लिया और उसके हाल-चाल पूछे। लड़का बोला, "हुज़ूर, उस बदमाश ने मुझे एक भी पैसा नहीं दिया और मुझे बहुत पीटा।"

डान क्विक्ज़ोट ने उसे धीरज बंधाते हुए कहा, "तुम घबराओ मत, मैं अभी उसकी खबर लेता हूं! सैन्को, ज़रा लड़ाई का सामान तैयार करो तो?"

डोरोथिया बोली, "सरदार पहले मेरा काम आपको पूरा करना पड़ेगा। मेरा काम बड़ा है। इसके बाद ही आप किसी दूसरे के काम में हाथ डाल सकते हैं।"

डान क्विक्ज़ोट को अपनी भूल मालूम हुई। वह बोला, "हां, ठीक बात है। लड़के, तुम्हें तब तक इन्तज़ार करना पड़ेगा।"

उस लड़के ने वहां से जाते-जाते कहा, "आपसे कभी कुछ नहीं हो सकेगा! आप बातें तो बड़ी-बड़ी करते हैं, लेकिन आपसे एक लड़के की मदद तक नहीं हो सकती। धिक्कार है आपकी सारी बहादुरी को!"

उस लड़के की इस गुस्ताखी को देखकर डान क्विक्ज़ोट मारे गुस्से के कांपने लगा। लेकिन तब तक वह लड़का जा चुका था। सब लोगों ने किसी तरह समझाकर उसे शांत किया।

दो दिन बाद सब लोग उसी सराय में पहुंचे। डान क्विक्ज़ोट और सैन्को पांजा को देखकर सराय के सभी लोग उनसे मिलने के लिए दौड़े। डान क्विक्ज़ोट ने सबको इस तरह आशीर्वाद दिया जैसे वह कोई बहुत बड़ा आदमी हो। फिर उसने सरायवाले की स्त्री से कहा, "मेरे लिए एक अच्छा-सा बिस्तर तैयार कर दो, मैं थक गया हूं। ज़रा आराम करना चाहता हूं।"

सरायवाले को पादरी ने पहले से ही इशारा कर दिया था। उसने झुककर डान क्विक्ज़ोट को सलाम किया और कहा, "हां

साहब, हो जाएगा, लेकिन मैं एक गरीब औरत हूं। मेरा भी ख्याल रखिएगा।"

खा-पीकर डान क्विक्ज़ोट अपने कमरे में आराम करने गया। वह थका हुआ तो था ही, थोड़ी देर में उसे नींद आ गई। नींद में उसने देखा कि वह राक्षसों से युद्ध कर रहा है और राजकुमारी के लिए उसका राज जीतकर लाने की कोशिश कर रहा है।

सब लोग अपने-अपने कमरे में सो रहे थे। अचानक थोड़ी देर बाद डान क्विक्ज़ोट के कमरे से उसके चीखने-चिल्लाने की आवाज़ आने लगी। वह जैसे किसी से लड़ रहा था और चिल्ला रहा था, "खड़े रहो डरपोको! अब भागते क्यों हो?"

अपने मालिक को पुकारते सुनकर सैन्को घबरा गया। उसने सराय में हल्ला मचाना शुरू किया, दौड़ो-दौड़ो मेरे सरदार की मदद करो! राक्षसों ने उन पर हमला कर दिया है। वैसे उन्हें किसी की मदद की ज़रूरत नहीं है, अब तक उन्होंने एक राक्षस को मार भी डाला है। मैंने खुद अपनी आंखों से देखा है कि ज़मीन पर राक्षस का सिर पड़ा है और ज़मीन खून से लाल हो गई है"

सरायवाले ने कहा, "क्यों बेकार की बातें करते हो! मैं कसम खाकर कह सकता हूं कि डान क्विक्ज़ोट ने अपने कमरे में रखी शराब की बोतलों को तोड़ डाला है और शराब ज़मीन पर फैल गई है। यह आदमी जब भी मेरे यहां आता है, इसी तरह कुछ न कुछ गड़बड़ करता है!"

सब लोग दौड़ते हुए डान क्विक्ज़ोट के कमरे में गए। डान क्विक्ज़ोट रात के कपड़े पहने कमरे के एक कोने में खड़ा था। उसके हाथ में तलवार थी, जिसे वह ज़ोरों से घुमा रहा था। उसने शराब की बोतलें और दो-तीन पीपे तोड़ डाले थे।

कमरे-भर में शराब फैली थी। सरायवाला यह देखकर गुस्से से पागल हो उठा। उसका बहुत नुकसान हुआ था। वह डान क्विक्ज़ोट पर टूट पड़ा और पीटने लगा, लेकिन पादरी और हज्जाम ने मिलकर किसी तरह से उसे शांत किया। डान क्विक्ज़ोट अभी तक जैसे नींद में ही था। अन्त में एक बाल्टी भरकर पानी उसके ऊपर डाला गया। तब वह कुछ होश में आया।

सैन्को कमरे में राक्षस का सिर खोज रहा था। बहुत कोशिश करने पर भी उसे टूटी हुई बोतलों और गिलासों के अलावा कुछ न मिला। उसे लगा कि अब उसका सरदार बनना मुश्किल ही है। डान क्विक्ज़ोट के साथ रहते-रहते अब वह भी उसकी बातों में कुछ विश्वास करने लगा था।

डान क्विक्ज़ोट ने डोरोथिया से कहा, "राजकुमारी, मैंने तुम्हारे दुश्मनों को मार डाला है। अब तुम सुख से अपना राज संभालो!"

जब वे लोग वहां से चलने लगे, तो सरायवाले ने अपने नुकसान के लिए पैसे मांगे और कहा, "जब तक मेरे पैसे नहीं मिल जाते, मैं इस आदमी को यहां से नहीं जाने दूंगा।" अन्त में पादरी ने किसी तरह उसे कुछ रुपये देकर मामला तय किया। वे लोग सराय से बाहर निकलने वाले थे, इतने में डोरोथिया का पति वहां आ पहुंचा। पादरी को लगा कि अगर यह डोरोथिया को ले जाएगा तो उसका बना बनाया खेल बिगड़ जाएगा। उसने किसी तरह उसे समझा-बुझाकर डोरोथिया को कुछ दिन अपने पास रखने की इजाजत मांग ली।

लेकिन सैन्को यह सब देख रहा था। उसे शक हो गया कि यह कोई राजकुमारी नहीं बल्कि एक साधारण स्त्री है। यह देखकर उसे बड़ी निराशा हुई। उसे लगा कि अब मेरे मालिक

को कोई राज नहीं मिलेगा, और न ही मैं सरदार बन सकूंगा। वह दौड़ा-दौड़ा डान क्विक्ज़ोट के पास पहुंचा और कहने लगा, "सरकार, आप भूल रहे हैं! जिसे आप राजकुमारी समझ रहे हैं, वह एक साधारण स्त्री है और आपने लड़ाई में किसी भी राक्षस को नहीं मारा है। वह तो लाल शराब थी, जो आपके कमरे के फर्श पर फैल गई थी, क्योंकि आपने शराब की बोतलें और पीपे तोड़ डाले थे।"

"क्या? क्या बक रहे हो? मैंने राक्षसों को नहीं मारा, बोतलें तोड़ी हैं?" डान क्विक्ज़ोट ने गुस्से से कांपते हुए कहा।

लेकिन सैन्को ने उसे समझाने की कोशिश की और फिर उसे टूटी हुई बोतलें दिखाईं। डान क्विक्ज़ोट को अपनी गलती मालूम हुई। वह बोला, "हां, यह कोई जादुई किला है। तुम्हें तो याद है, पिछली बार इन लोगों ने तुम्हारे साथ कैसा सलूक किया था। लाओ, जरा मेरे कपड़े ले आओ। मैं राजकुमारी से मिलता हूं और देखता हूं कि तुम्हारी बात कहां तक सच है।"

अच्छी तरह सज-धजकर और हाथ में भाला लेकर वह डोरोथिया के पास पहुंचा और बोला, "राजकुमारी, मेरा नौकर कहता है कि आप राजकुमारी नहीं हैं, एक साधारण स्त्री हैं, क्या यह बात सच है?"

वह बोली, "नहीं, आपका नौकर झूठ बोलता है। मैं तो राजकुमारी ही हूं। आज रात और यहीं आराम कर लिया जाए। कल फिर हम लोग आगे बढ़ेंगे।"

12

रात हुई। सब लोग सोने की तैयारी करने लगे, लेकिन डान क्विक्ज़ोट को एक नई झक सवार हुई। उसने कहा, "यह किला जादुई मालूम होता है। इसीलिए मैं रात में यहां पहरा देना चाहता हूं।" वह अपने घोड़े पर सवार होकर बाहर निकल गया और सचमुच पहरा देने लगा। यह देखकर सरायवाले की लड़की और उसकी एक सहेली को कुछ शरारत सूझी। सराय में एक खिड़की थी, जहां से डान क्विक्ज़ोट को अच्छी तरह देखा जा सकता था। वे दोनों वहीं आ बैठीं।

डान क्विक्ज़ोट सराय के आसपास चक्कर काट रहा था। अचानक उसकी नज़र इन लड़कियों पर जा पड़ी। उसे लगा कि लड़कियां उससे शादी करना चाहती हैं। वह बोला, "देखो सुन्दरियो, मैं तुम लोगों से शादी नहीं करता। मै सिर्फ डेलसीनिया से विवाह करूंगा।"

उनमें से एक लड़की ने कहा, "अरे, सरकार, आप ज़रा अपना हाथ तो इधर दीजिए।"

डान क्विक्ज़ोट घोड़े पर खड़ा हो गया। उसने अपना हाथ खिड़की में फैला दिया। लड़कियों ने उसके हाथ में एक रस्सी बांध दी और उसे कसकर खिड़की के एक कड़े के साथ बांध दिया। फिर वे वहां से गायब हो गईं।

डान क्विक्ज़ोट को लगा कि लड़कियों ने उसके हाथ को

पकड़ रखा है, लेकिन दो तीन झटके देने के बाद ही उसे पता लग गया कि उसका हाथ ऊपर बांध दिया गया है। उसकी हालत बड़ी अजीब थी। अगर घोड़ा ज़रा-सा भी हिलता तो वह गिर पड़ता और हाथ के सहारे अधर में ही लटका रहता। वह सोचने लगा, 'इसमें मेरा ही दोष है। में क्यों फिर इस जादुई किले में आया!'

किसी तरह सवेरा हुआ। दो नये मुसाफिर सराय में ठहरने के लिए आए। जब वे लोग सराय का दरवाज़ा खटखटाने लगे तो डान क्विक्ज़ोट ने उन्हें डांटकर कहा, "कौन हो जी तुम? इतने सवेरे किले के दरवाज़े नहीं खुला करते, क्या तुम्हें इतना भी नहीं मालूम?"

तब तक मुसाफिरों का घोड़ा डान क्विक्ज़ोट के घोड़े के पास जा पहुंचा और उसे छेड़ने लगा। रोजीनांट ज़रा पीछे हट गया और बस, डान क्विक्ज़ोट हाथ के सहारे लटका रह गया। तब तक वे दोनों लड़कियां जाग उठीं। उन्हें डान क्विक्ज़ोट पर दया आ गई। उन्होंने रस्सी काट दी। डान क्विक्ज़ोट धड़ाम से ज़मीन पर आ गिरा। उसे काफी चोट आ गई थी। वह कराहने लगा। उसके साथी उसकी मदद के लिए आए और उससे सारा क़िस्सा पूछने लगे। लेकिन वह कुछ नहीं बोला। चुपचाप वह ज़मीन से उठ आया। फिर उसने अपने हाथ से रस्सी के उस टुकड़े को भी अलग किया और घोड़े पर सवार होकर सराय का चक्कर लगाया। फिर अन्दर आकर उसने ललकारा, "जिसने भी मेरे साथ यह शरारत की है, मैं उसे लड़ने के लिए चुनौती देता हूं।" लेकिन सराय के सब लोग अब तक उसकी आदत समझ चुके थे। सब चुप रहे।

दूसरा दिन ज़रा आराम से कटा। डान क्विक्ज़ोट बहुत थक गया और घायल भी हो गया था। इसीलिए वह दिन-भर सोता

रहा। इस बीच उसके साथियों ने एक दूसरी तरकीब सोची। उन्होंने डोरोथिया को छुट्टी दे दी। फिर एक बड़ा-सा पिंजड़ा तैयार कराया गया और एक गाड़ीवाले को बुलाकर उसने भाड़ा तय किया। फिर सैन्को को छोड़कर बाकी दोनों ने अपना भेस बदल लिया।

पूरी तैयारी करके वे डान क्विक्ज़ोट के कमरे में पहुंचे। वह औंधा पड़ा खर्राटे भर रहा था। वे लोग एक रस्सी से उसे बांधने लगे। डान क्विक्ज़ोट की नींद खुल गई। तब तक उसके हाथ-पैर बंध चुके थे। वह इन अनजान आदमियों को देखकर बहुत घबराया। उसने उठने की कोशिश की, लेकिन उससे उठते नहीं बना। उसने सोचा कि ये सब लोग मिलकर मुझपर जादू कर रहे हैं और इसलिए मैं उठ नहीं पा रहा हूं।

उन्होंने उसे बांधकर पिंजड़े में रखा और पिंजड़े को गाड़ी पर लाद लिया। डान क्विक्ज़ोट ने पिंजड़े में पड़े-पड़े ही सरायवाले से कहा, "किलेदार साहब, आपने जो मेरी आवभगत की है, उसे मैं कभी नहीं भूलूंगा। अभी तो ये जादूगर ज़रा मुझे परेशान कर रहे हैं। जब मैं इनके चंगुल से छूट जाऊंगा आपको आकर इस सेवा के लिए इनाम दूंगा।"

हज्जाम ने ज़रा आवाज़ बदलकर कहा, "सरदार, आप चुपचाप आराम से लेटे रहिए। हम लोग आपको डेलसीनिया के पास शादी कराने ले जा रहे हैं।

सब लोग चल पड़े। कुछ दूर चलने पर उन्हें कुछ राहगीर मिले। उनमें से एक ने डान क्विक्ज़ोट के साथियों से पूछा, "यह कौन है?"

डान क्विक्ज़ोट पिंजड़े में से बोला, "क्या करोगे तुम लोग पूछकर? अगर तुम लोगों ने कभी वीरों और बहादुरों के बारे में सुना हो, तभी तुम्हें मेरी बात समझ में आ सकती है।' वरना

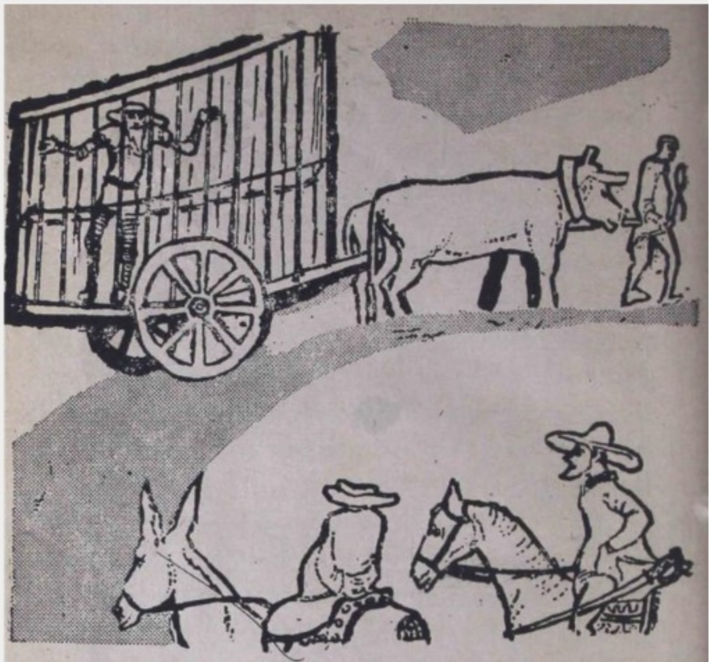

डान क्विक्ज़ोट को पिंजरे में बन्द कर घर लाया गया।

अपना रास्ता लो, ये बहादुरों के किस्से हैं!"

पिंजड़े में बन्द एक आदमी को इस तरह बकते देखकर वे लोग वहीं रुक गए। तब तक पीछे से सैन्को भी आ पहुंचा। वह बोला, "यह जादू-वादू कुछ नहीं है। ये लोग हमारे गांव के पादरी और हज्जाम हैं। इन्होंने मेरे मालिक को जबरदस्ती पिंजड़े में बन्द कर लिया है। ये लोग इन्हें गांव वापस ले जाना चाहते हैं। मेरे मालिक बहुत बड़े बहादुर हैं। इन्हें राज मिलने वाला ही था, लेकिन बीच में इन लोगों ने आकर गड़बड़ी कर दी।"

लेकिन पादरी ने राहगीरों को समझा-बुझाकर चलता कर

दिया। फिर वे लोग आगे बढ़े।

इस तरह चलते-चलते करीब छः दिन बाद वे लोग अपने गांव पहुंचे। यह छुट्टी का दिन था। गांव के सभी लोग सुबह धूप में अपने घरों के बाहर निकले थे। कोई बैठा था, कोई इधर-उधर घूम रहा था। इतने में डान क्विक्ज़ोट की गाड़ी वहां पहुंची। सब लोग दौड़ पड़े। डान क्विक्ज़ोट को बन्द देखकर उनके आश्चर्य की सीमा न रही। तब तक एक लड़का दौड़कर डान क्विक्ज़ोट की भतीजी को खबर दे आया।

इस तरह डान क्विक्ज़ोट फिर से अपने घर पहुंचा। अब उसे पता चला कि वह कहां आ पहुंचा है। अपनी भतीजी को देखकर वह बहुत खुश हुआ और उसे विश्वास हो गया कि अब उस पर से जादू का असर हट गया है।

सैन्को पांजा की स्त्री को जब खबर मिली तो वह भी दौड़ी आई। उसने सैन्को पांजा से सारा हालचाल पूछा और फिर बोली, "सरदार की नौकरी करके तुम मेरे लिए और मेरे बच्चे के लिए क्या लाए?"

सैन्को बड़े चक्कर में पड़ा और बोला, "अभी तो मैं कुछ भी नहीं लाया, लेकिन बहुत जल्दी ही हम लोग फिर से यात्रा पर निकलेंगे और फिर देख लेना, मैं तुम्हारे लिए क्या-क्या लाता हूं। मैं एक बड़ा भारी जिलेदार बन जाऊंगा और तुम्हारी सेवा के लिए बहुत से दास-दासियों को ले आऊंगा।"

इस तरह बात करते हुए सैन्को पांजा घर लौट आया। उधर पादरी ने डान क्विकज़ोट को भतीजी को समझा दिया, "इसे एक क्षण के लिए भी अकेला न छोड़ना। अगर इस बार यह निकल गया तो फिर इसे लाना बड़ा मुश्किल होगा।"

दूसरा भाग

1

लगभग एक महीना बीत गया। पादरी और हज्जाम भी इस बीच डान क्विक्ज़ोट से मिलने नहीं आए। उन्हें डर था कि वह इस समय नाराज़ होगा। उसकी भतीजी से उन्हें उसके बारे में खबर मिलती रहती थी। अन्त में एक दिन वह उससे मिलने पहुंचे।

डान क्विकज़ोट काफी देर तक उनसे इधर-उधर की बात करता रहा। अन्त में बातचीत वीरों के पराक्रमों और साहसपूर्ण कार्यों के बारे में होने लगी। इन बातों के शुरू होते ही पादरी ने समझ लिया कि डान क्विक्ज़ोट में ज़रा भी फ़र्क नहीं आया है। वह अब भी उसी तरह सोचता था।

लौटते समय पादरी ने हज्जाम से कहा, "देख लेना, यह फिर से भाग निकलेगा। इसका दिमाग वैसा ही है जैसा आज से एक महीना पहले था।"

इस बीच डान क्विक्ज़ोट को एक और नया मित्र मिल गया। वह एक नौजवान था। उसका नाम था सैम्सन। सैम्सन बड़ा मनमौजी आदमी था। वह मज़ाक-मज़ाक में डान क्विक्ज़ोट को खूब बनाता था। और उसके वीरतापूर्ण कार्यों के गीत गाकर उसके दिमाग को और खराब करता था। वह कहता, "साहब, पूरे स्पेन में आपकी बहादुरी के किस्से मशहूर हो गए हैं। लोग आपको बहुत बड़ा वीर मानते हैं।"

सैम्सन की बातें सुन-सुनकर सैन्को पांजा भी फिर से

हिम्मत बांधने लगा। डान क्विक्ज़ोट भी फिर दुनिया का दुख दूर करने के लिए और अत्याचारियों का दमन करने के लिए निकलने को सोचने लगा। उसने इस बारे में सैम्सन से राय ली।

सैम्सन बोला, "मेरी तो राय यह है कि इस बार आप सीधे सरगोसा शहर में जाइए। वहां सेण्ट जार्ज के सम्मान में एक बड़ा भारी उत्सव होने वाला है। दूर-दूर से लोग आएंगे। बहुत से सरदार और पुराने योद्धा भी वहां आएंगे। वहां आपको अपना पराक्रम दिखाने का मौका मिलेगा। मुझे तो पूरा विश्वास है कि आप सारे सरदारों को जीत लेंगे और सरदारों के सरदार कहलाएंगे।"

इस बार डान क्विक्ज़ोट ने सरगोसा जाने का निश्चय किया। उसने सैन्को को बुलाया और सारी तैयारी करने का हुक्म दिया। तैयारी में लगभग आठ दिन लग गए।

अब धीरे-धीरे डान क्विक्ज़ोट की भतीजी को शक होने लगा। वह दिन-रात उस पर नजर रखने लगी। सैन्को पांजा अब दिन में कई बार डान क्विक्ज़ोट के पास आता था। दोनों घंटों अकेले बैठकर गुप-चुप बातें किया करते थे। यह सब देखकर उसे विश्वास हो गया कि ये लोग फिर से कहीं जाने की तैयारी कर रहे हैं।

डान क्विक्ज़ोट की भतीजी ने सैम्सन से जाकर कहा। सैम्सन बोला, "तुम घबराओ मत। मैं उसे समझा दूंगा।" लेकिन उसे समझाने की बजाय उलटे उसने उसे और भड़काना शुरू कर दिया। यहां तक कि उसने न मालूम कहां से लाकर एक टूटा-फूटा मुकुट भी डान क्विक्ज़ोट को भेंट कर दिया। इस बार डान क्विक्ज़ोट ने एलान किया कि तीन दिन बाद मैं अपनी यात्रा पर निकल पड़ूंगा। उसने किसी की एक न सुनी।

और एक दिन शाम को अचानक वह सैन्को पांजा को साथ लेकर चल पड़ा। सैम्सन उसे कुछ दूर तक पहुंचाने भी गया। इस बार डान क्विक्ज़ोट ने अचानक सोचा कि क्यों न पहले डेलसीनिया से मिला जाए! और वह टोबोसो के रास्ते पर चल पड़ा।

दो दिन तक चलने के बाद वे लोग एक दिन शाम को टोबोसो शहर के करीब जा पहुंचे। दूर से टोबोसो शहर की मीनारें और बुर्जियां दिखाई दे रही थीं। सैन्को पांजा मन में कुछ घबरा रहा था। उसने सोचा कि एक बार मेरे मालिक ने मुझे राजकुमारी डेलसीनिया के पास सन्देश लेकर भेजा था और मैं बीच रास्ते से ही लौट आया था। अब अगर राजकुमारी डेलसीनिया से मालिक की मुलाकात हुई और उसने उसे बता दिया तो मैं क्या करूंगा।

वे लोग टोबोसो शहर के काफी पास पहुंच चुके थे। डान क्विक्ज़ोट ने पहले से ही तय कर रखा था कि हम लोग रात के अंधेरे में शहर में घुसेंगे। इसलिए उन्होंने शहर के बाहर ही एक पेड़ के नीचे डेरा डाल दिया और रात होने का इन्तजार करने लगे।

काफी रात बीतने पर दोनों शहर में गए। चारों तरफ सुनसान था। सड़कों और गलियों में कोई नहीं था। लोग अपने-अपने मकानों में सो रहे थे। डान क्विक्ज़ोट ने सैन्को से कहा, "भाई सैन्को, आगे-आगे चलो और मुझे राजकुमारी डेलसीनिया के महल की ओर ले चलो। तुम तो एक बार पहले आ ही चुके हो। वह उधर क्या दिखाई दे रहा है? वह तो महल नहीं है?"

"सरकार मैं कुछ-कुछ रास्ता भूल रहा हूं। चलिए, देखें,

शायद उधर ही महल हो।" थोड़ी देर तक दोनों इधर-उधर भटकते रहे और फिर गिरजाघर के पास पहुंचे।

"अरे, यह तो कोई गिरजाघर मालूम होता है!" डान क्विक्ज़ोट बोला। वे दो-तीन घंटे तक रात में इसी तरह घूमते रहे, लेकिन उन्हें राजकुमारी डेलसीनिया के महल का पता नहीं मिला। सरदार तो निराश हो रहा था और उसका नौकर इस फिराक में था कि किस तरह सवेरा होने के पहले ही उसे शहर से बाहर निकाल ले जाए। कुछ देर बाद वह बोला, "सरकार, आप चलकर शहर के बाहर कुछ देर आराम कीजिए। इस बीच मैं अकेला राजकुमारी का पता लगा लूंगा। मैं आपका सन्देश जरूर उस तक पहुंचा दूंगा।"

डान क्विक्ज़ोट को उसकी बात ठीक लगी। दोनों शहर के बाहर आए। सैन्को उसे पेड़ के पास तक पहुंचाकर फिर से शहर की तरफ लौटा।

2

सैन्को अपने खच्चर पर बैठा शहर की तरफ बढ़ता जा रहा था और सोच रहा था कि अब क्या किया जाए?

जहां तक उसे क्विक्ज़ोट दिखाई देता रहा, वहां तक तो वह तेजी से चलता रहा और फिर उसकी आंखों से ओझल होने के बाद वह भी एक पेड़ के नीचे रुक गया। वह खच्चर से उतर पड़ा और पेड़ के नीचे बैठकर सोचने लगा—मेरा मालिक बिना राज-

कुमारी डेलसीनिया से मिले यहां से नहीं जाएगा। लेकिन मैं यहां कहां उसे खोजूं? मालिक का तो दिमाग फिर गया है। उसे हर चीज़ अजीब ही नजर आती है। कभी भी वह किसी चीज को उसकी असली शक्ल में नहीं देखता। अगर मैं डेलसीनिया के बजाय किसी देहाती लड़की को उसके सामने ला दूं तो वह उसे ही राजकुमारी मान लेगा।

यह सोचकर सैन्को वहीं आराम से बैठा रहा। शाम हो गई। उधर डान क्विक्ज़ोट यह सोच रहा था कि मेरा नौकर शहर में राजकुमारी को खोज रहा है। शाम होते-होते सैन्को जब अपने मालिक के पास लौटने लगा तो भाग्य से रास्ते में तीन लड़कियां आती हुई मिलीं। वह खच्चर को दौड़ाता हुआ लड़कियों से आगे निकल गया और अपने मालिक के पास जा पहुंचा। उसने उससे कहा, "हुज़ूर, उठिए, जल्दी से तैयार हो जाइए। खुद राजकुमारी डेलसीनिया अपनी दासियों के साथ आपसे मिलने आ रही है।"

डान क्विक्ज़ोट वैसे ही पहले से बहुत निराश हो चुका था। उसने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया। किसी तरह समझा-बुझाकर सैन्को उसे पेड़ की ओट से बाहर ले आया। वह कहने लगा, "सरकार, ज़रा जल्दी चलिए। आप खुद देख लीजिए, वह आ रही है। वह देखिए, उसने कितने सुन्दर सुनहरे कपड़े पहन रखे हैं! आखिर राजकुमारी है। उसे किस बात की कमी! हीरे-मोती के गहनों से वह लदी हुई है। उसके सुनहरे बाल कितने सुन्दर लग रहे हैं! उसकी दासियां भी कोई कम नहीं हैं।"

डान क्विक्ज़ोट ने बाहर आकर देखा। सचमुच तीन लड़कियां उधर ही आ रही थीं, लेकिन उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने सैन्को से कहा, "क्या तुमने सचमुच राजकुमारी

डेलसीनिया को आते देखा है ?"

'देखा क्या है सरकार ? क्या आप नहीं देख रहे हैं ? वह सामने ही तो आ रही है।"

"लेकिन मुझे तो ये कोई देहातिन नज़र आ रही हैं ? ये खच्चरों पर बैठी शहर से लौट रही हैं।

"नहीं-नहीं सरकार, यह आप क्या कह रहे हैं ? ज़रा ठीक से देखिए तो जिसे आप रात-दिन याद करते रहते हैं, वही डेलसीनिया डेल टोबोसो, जो संसार की सबसे सुन्दर राजकुमारी है, आपसे मिलने चली आ रही है।"

तब तक वे तीनों लड़कियां पास आ चुकी थीं। सैन्को लपक-कर आगे बढ़ा। उसने बीचवाली लड़की के खच्चर की लगाम पकड़ ली। फिर वह उसके पैरों के पास घुटनों के बल बैठ गया और बोला, "अरे, संसार की सर्वश्रेष्ठ राजकुमारो ! यह मेरे सरदार हैं, जो आप पर मुग्ध हैं और कई बड़ी-बड़ी लड़ाइयां जीतकर आपसे मिलने आए हैं। मैं तो इनका एक छोटा-सा सेवक हूं। आज मेरे सरदार की प्रसिद्धि सारे स्पेन में फैल गई है। इनका नाम है डान क्विक्ज़ोट डी ला मांसा।"

तब तक डान क्विक्ज़ोट भी पास आ गया और सैन्को के पास घुटनों के बल बैठ गया। वह आंखें सिकोड़कर उस लड़की की ओर देखने लगा। उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हो रहा था कि संसार की इतनी सुन्दर राजकुमारी को ऐसी देहाती लड़की का रूप किसने दे दिया ? वह लड़की इन दो आदमियों को अपने पैरों के पास झुके देखकर बड़े आश्चर्य में पड़ गई। उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि इनका मतलब क्या है ? अन्त में वह बोली, "क्यों हमारे रास्ते में खड़े हो ! चलो, अलग हटो, मुझे जाने दो।"

सैन्को बोला, "इतना बड़ा सरदार आपके पैरों में झुका हुआ

है, फिर भी आपको उस पर दया नहीं आती ?"

"अरे, रहने भी दो। बेकार बातें न बनाओ। हम लोगों को देहाती समझकर ठगना चाहते हो ! रास्ता छोड़ो ?" दूसरी लड़की ने गुस्से में आकर कहा।

डान क्विक्ज़ोट बोला, "चलो सैन्को, मुझे लगता है कि मेरी तकदीर ही खोटी है। मुझे डेलसीनिया के लिए अभी तप करना पड़ेगा।" फिर उसने उस लड़की से कहा, "सुन्दरी, मुझे लगता है कि ज़रूर मेरे किसी दुश्मन ने तुम पर जादू कर दिया है, वरना ऐसा नहीं हो सकता कि तुम मुझे पहचानो ही नहीं। मेरे दुश्मनों की तादाद इधर बहुत बढ़ गई है, वे चाहते हैं कि मेरी एक भी इच्छा पूरी न हो।"

वह लड़की बोली, "हमें आपकी बात नहीं सुननी, आप मेहरबानी करके हमारा रास्ता छोड़ दीजिए।"

सैन्को को लगा कि उसकी चाल काम कर गई। उसने फौरन खच्चर की लगाम छोड़ दी। तीनों लड़कियां आगे बढ़ गईं। उनके चले जाने के बाद डान क्विक्ज़ोट ने ठण्डी आहें भरते हुए कहा, "देखो न सैन्को, मैं तुमसे कहता था कि दुश्मन मेरे पीछे पड़े हैं, वरना भला ऐसा कहीं हो सकता है कि मेरी डेलसीनिया मुझे पहचाने भी नहीं !"

सैन्को मन ही मन हंसता रहा। फिर दोनों सरगोसा के रास्ते पर चल पड़े। डान क्विक्ज़ोट मन में बहुत दुःखी था। बार-बार वह सैन्को से डेलसीनिया के बारे में बात करता था और सैन्को उसे धीरज बंधाने की कोशिश करता था। इसी तरह दोनों बातें करते चले जा रहे थे।

3

चलते-चलते वे लोग एक सराय में पहुंचे और रात वहीं गुजारने का निश्चय किया। काफी देर बाद रात में दो आदमी और वहां आए। देखने में वे भी ऐसे लगते थे जैसे उनमें से एक सरदार और उसके साथ एक नौकर हो। आनेवाले नये सरदार ने थोड़ी देर बाद एक गीत गाना शुरू किया। वह गीत बड़ा दुःख भरा था। थोड़ी देर में डान क्विक्ज़ोट ने उससे दोस्ती कर ली और सैन्को को साथ लेकर उसके पास जा पहुंचा। सैन्को ने भी उसके नौकर से दोस्ती कर ली। अब दोनों सरदार अलग बैठकर बातें करने लगे। उनके नौकर भी कुछ दूर हटकर आपस में बात करने लगे। नये सरदार के नौकर ने सैन्को को कुछ खिलाया और शराब भी पिलाई। खा-पीकर दोनों सो गए।

इधर दोनों सरदारों में बातचीत चलती रही। नया सरदार कह रहा था, "मैं भी एक राजकुमारी से शादी करना चाहता हूं। वह दुनिया की सबसे सुन्दर राजकुमारी है। उसका नाम है केसील्डिया। लेकिन वह बड़े कड़े दिल की है। मैं उसके लिए बहुत बड़े-बड़े काम करता हूं, लेकिन अब भी वह मुझसे खुश नहीं हो सकी है। उसका कहना है कि मैं स्पेन घूम-घूमकर हर आदमी से यह कबूल कराऊं कि केसील्डिया जैसी सुन्दर स्त्री संसार में और कोई नहीं है। जो इसे कबूल नहीं करता है उससे

मैं युद्ध करता हूं और युद्ध में उसे हराकर अपनी बात कबूल करवाता हूं। अब तक मैंने कई राक्षसों को मारा है और बड़े-बड़े सरदारों को लड़ाई में हराया है। करीब-करीब सभी सरदारों से मैंने अपनी बात कबूल करवा ली है। सबसे बड़ी खुशी तो मुझे इस बात की है कि मैंने स्पेन के सबसे बड़े बहादुर सरदार डान क्विक्ज़ोट को भी हराया है। वह मूर्ख कहता है कि डेलसीनिया डेल टोबोसो संसार में सबसे अधिक सुन्दर है। मैंने उसे हराकर उससे भी कबूल कराया कि मेरी केसील्डिया ही सबसे अधिक सुन्दर है।"

यह सुनकर डान क्विक्ज़ोट भौंचक्का रह गया। उसके गुस्से की सीमा नहीं थी। उसका मन हुआ कि अभी इसे मज़ा चखाना चाहिए; लेकिन उसने अपने गुस्से को काबू में रखा और कहा, "जनाब, आपने स्पेन के बहुत से सरदारों को जीता है, इस बात को मैं मान सकता हूं, लेकिन मैं यह नहीं मान सकता कि आपने डान क्विक्ज़ोट को हराया है। हो सकता है, उसके जैसे किसी आदमी से आपकी मुलाकात हो गई हो। लेकिन डान क्विक्ज़ोट को आपने अभी नहीं देखा है"

दूसरा सरदार बोला, "नहीं कैसे देखा! मैंने तो उसे लड़ाई में हराया है। मैं कहीं भी देखकर उसे पहचान सकता हूं। उसका शरीर पतला-दुबला है और चेहरा लम्बा है। उसके साथ एक बेवकूफ नौकर रहता है, जिसका नाम सैन्को पांजा है। जिस लड़की को वह चाहता है, उसका नाम डेलसीनिया है। तुम्हें मेरी बात पर अब भी विश्वास नहीं होता? लगता है कि तुम मुझसे लड़ाई मोल लेना चाहते हो। कोई बात नहीं, आओ दो-दो हाथ हो जाए!"

डान क्विक्ज़ोट बोला, "अरे, चुप भी रहो, बेकार डींग न हांको! मैं अब भी कहता हूं, डान क्विक्ज़ोट से तुम्हारा सामना

नहीं हुआ। हो सकता है कि जादू से उसका रूप धरकर कोई तुम्हारे सामने आ गया हो। उसके दुश्मन अक्सर उसे बदनाम करने में लगे रहते हैं। अगर अब भी तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं होता तो देख लो, महावीर डान क्विक्जोट तुम्हारे सामने खड़ा है। अगर डान क्विक्ज़ोट से तुम्हारी लड़ने की हिम्मत हो तो आओ, मैं तैयार हूं। अगर पैदल लड़ना हो तो वैसे कहो, वरना मेरा घोड़ा भी तैयार है।" यह कहकर डान क्विक्ज़ोट ने पहले अपनी तलवार म्यान में से निकाली, फिर उसे म्यान में डाल लिया और अपना भाला संभालकर वह लड़ने के लिए तैयार हो गया।

"सीनोर! डान क्विक्ज़ोट, ठीक है, जिसने एक बार तुम्हारे जादुई रूप से लड़ाई लड़ी है, वह तुम्हारे सच्चे रूप से भी लड़ने के लिए तैयार है। लेकिन तुम जानते हो कि हम लोग इस अंधेरे में चोर-डाकुओं की तरह नहीं लड़ते। हम लोग बहादुर आदमी हैं। सवेरा होने दो। सुबह देख लेंगे। लेकिन एक शर्त है: जो हारे उसे जीतने वाले की बात माननी पड़ेगी। बोलो, यह कबूल है?"

डान क्विक्ज़ोट ने अकड़कर कहा, "हां-हां मंजूर है। ठीक है, सवेरा होने दो?"

सवेरा हुआ। दोनों सरदार लड़ने के लिए अपने-अपने घोड़े पर सवार होकर मैदान में पहुंचे। डान क्विक्जोट ने देखा कि नया सरदार बहुत अच्छी पोशाक पहने था। उस पर कई तमगे लटक रहे थे। उसने अपने सिर पर एक बहुत ही अच्छा मुकुट पहन रखा था, लेकिन मुंह किसी तरह छिपा रखा था। डान क्विक्जोट ने उससे अपना चेहरा दिखाने को कहा। लेकिन उसने कहा, "जब तक लड़ाई खत्म नहीं हो जाती, मैं अपना चेहरा नहीं दिखाऊंगा।"

उधर नये सरदार के नौकर ने सैन्को पांजा से कहा कि जब हमारे मालिक लड़ रहे हैं तो हमें भी लड़ना चाहिए। लेकिन सैन्को पांजा लड़ाई से घबराता था। अब मार खाने की उसे जरा भी इच्छा नहीं थी। वह बोला, "नहीं, पहले हमें दोनों सरदारों को लड़ने देना चाहिए। मैं तो एक पेड़ पर चढ़कर इनकी लड़ाई देखना चाहता हूं।" यह कहकर वह देखने लगा।

इधर दोनों सरदार अपने-अपने घोड़ों को इधर-उधर नचाने लगे और एक दूसरे पर निशाना साधने लगे। अचानक डान क्विक्ज़ोट उस पर टूट पड़ा और अपने भाले के एक वार में ही उसने उसे जमीन पर गिरा दिया। उसने इतनी ज़ोर से वार किया कि नया सरदार बेहोश हो गया। फौरन डान क्विक्ज़ोट अपने घोड़े से उतर आया और पास जाकर उसे देखने लगा। उसने सबसे पहले उसका चेहरा देखा तो चौंक पड़ा। यह और कोई नहीं, उसका दोस्त सैम्सन ही था। असल में बात यह थी कि डान क्विक्ज़ोट के गांव के लोगों ने डान क्विक्ज़ोट को वापस लौटा लाने के लिए यह एक चाल चली थी। उसका ख्याल था कि सैम्सन उसे लड़ाई में हरा देगा और फिर अपनी शर्त के अनुसार उसे गांव वापस लौटने के लिए कहेगा। लेकिन सैम्सन खुद ही हार गया।

डान क्विक्ज़ोट ने सैम्सन को आवाज दी। सैन्को पेड़ से नीचे उतर आया। क्विक्ज़ोट बोला, "देख रहे हो न सैन्को, मैं तुमसे कहता था कि मेरे दुश्मन जादूगर सब कुछ कर सकते हैं।"

तब तक सैम्सन को होश आ गया था। उसकी छाती पर अपना भाला टेककर डान क्विक्ज़ोट बोला, "सैम्सन, तुम्हारी यह हिम्मत! तुम मुझसे लड़ने आए थे? अब हमारी शर्त के अनुसार यह कबूल करो कि तुम मुझे अपना सरदार मानोगे। तुमको यह भी मानना होगा कि संसार में मेरी डेलसीनिया को छोड़कर और

कोई स्त्री सुन्दर नहीं है। दूसरी बात यह है कि तुम्हें राजकुमारी डेलसीनिया के पास जाना होगा और उससे कहना होगा कि डान क्विक्ज़ोट संसार का सबसे बड़ा वीर है और उसने तुम्हें हराया है। जिसे तुमने हराया था, वह मेरी ही शक्ल का कोई दूसरा आदमी होगा। जिस तरह अभी तुम मुझे मेरे दोस्त सैम्सन की तरह लग रहे हो, उसी तरह वह आदमी भी तुम्हें मेरी तरह लगा होगा।"

सैम्सन दर्द से कराह रहा था। उसने फौरन उसकी बात मान ली। डान क्विक्ज़ोट ने उसे छोड़ दिया। वह उठकर अपने नौकर के साथ फौरन वहां से चलता बना। डान क्विक्ज़ोट भी अपने रास्ते पर आगे बढ़ा। इस लड़ाई से वह बहुत खुश था।

4

आगे चलने पर फिर वे एक जगह पर ठहरे। वहां कठपुतलियों का तमाशा हो रहा था। एक आदमी कठपुतलियां नचा रहा था और उनके ज़रिये स्पेन के वीरों के किस्से लोगों को सुना रहा था। डान क्विक्ज़ोट को सुनते-सुनते इतना जोश आया कि उसने कठपुतलियों को सचमुच के आदमी समझ लिया। वह कठपुतलियों पर टूट पड़ा और देखते-देखते उसने उन सबको तोड़ डाला। इसके लिए उसे और सैन्को को बहुत मार खानी पड़ी। लोगों ने

पीटते-पीटते उन्हें अधमरा कर डाला। किसी तरह जान बचाकर वे लोग आगे बढ़े।

चलते-चलते वे लोग एक नदी के किनारे पहुंचे। वहां एक नाव पेड़ से बंधी खड़ी थी। डान क्विक्ज़ोट ने सोचा कि किसी ने इस नाव को मेरे लिए ही बांधा है ताकि अगर मैं किसी राजकुमारी या किसी सरदार को कैद से छुड़ाऊं तो उसे इस नाव में बिठाकर दूर पहुंचा दूं। वह बोला, "सैन्को, यह नाव मेरे लिए ही खड़ी है। तुम किसी पेड़ में मेरा घोड़ा बांध दो और अपना खच्चर भी वहां बांध दो। चलो, हम ज़रा नाव से चलें।"

मालिक के इस हुक्म को सुनकर सैन्को घबरा गया। वह बोला, "हुज़ूर, यह आप क्या कर रहे हैं! यह नाव तो किसी मछुए की मालूम होती है। और फिर साहब, इस जंगल में अपने जानवरों को किसके भरोसे छोड़ना चाहते हैं? ये बेचारे भूखों मर जाएंगे।"

तुम घबराओ मत! जिसने हमारे लिए यह नाव भेजी है, वह हमारे जानवरों की देखभाल करेगा ही। ऐसा कैसे हो सकता है कि महावीर डान क्विक्ज़ोट का घोड़ा भूखों मर जाए!"

सैन्को ने अपने मालिक के हुक्म के मुताबिक घोड़े और खच्चर को एक पेड़ के साथ बांध दिया। अपने खच्चर को छोड़ते हुए उसे रोना आ रहा था।

दोनों नाव में सवार हुए। उस नाव में न पाल थी, न पतवार और न तो डांडी। नाव अपने मन से बहने लगी। बहते-बहते वे लोग एक ऐसी जगह पर पहुंचे, जहां नदी में एक पनचक्की चल रही थी। यह पानी के बहाव से चलती थी। इसमें अनाज पीसा जाता था। इसे देखकर डान क्विक्ज़ोट बोला, "सैन्को, देखो,

सामने वह एक किला दिखाई दे रहा है। लगता है, इसमें कोई कैद है। उसे ही छुड़ाने के लिए यह नाव किसी ने वहां बांधी थी। वह जानता था कि डान क्विक्ज़ोट यहां आएगा और उसकी मदद करेगा। देखा, मेरी बहादुरी के किस्से चारों ओर फैल गए हैं। लोग मुझे बहुत बड़ा बहादुर मानते हैं और जानते हैं कि मैं लोगों को संकट से बचाता हूं।"

सैन्को बोला, "नहीं हुज़ूर, यह तो एक पनचक्की है, यहां कोई किला नहीं है।"

डान क्विक्ज़ोट ने उसे डांटते हुए कहा, "सैन्को, तुम इतने दिनों से मेरे साथ हो, लेकिन तुममें ज़रा भी अकल नहीं आई। मैंने तुमको कितनी बार कहा है कि जादूगर लोग किसी भी चीज़ की शक्ल बदल सकते हैं। जिस चीज़ को तुम पनचक्की बता रहे हो, वह असल में किला है।"

तब तक उनकी नाव पनचक्की की तरफ बढ़ चली। वहां पानी काफी तेज़ था, जिससे पनचक्की का पहिया घूमता था। चक्की वाले ने देखा तो वह चीखा, "अरे, कौन लोग हो तुम? तुम लोग नदी में डूबना चाहते हो? उस पहिए से दूर रहो, वरना चक्की में पिस जाओगे।"

डान क्विक्ज़ोट ने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और चिल्लाकर कहा, "सुनो, तुम चाहे जो कोई भी हो, भूत-प्रेत हो या राक्षस हो, मैं तुमसे डरनेवाला नहीं! मैं तुम्हें हुक्म देता हूं, उस किले में तुमने जिसे भी कैद कर रखा है, उसे फौरन रिहा कर दो, वरना आज तुम्हारी जान की खैर नहीं!"

यह कहकर उसने तलवार निकाल ली और उसे हवा में चलाना शुरू किया।

नाव चक्की के पहिये की तरफ बढ़ती चली जा रही थी। लोग लम्बे-लम्बे बांस लेकर नाव को बचाने के लिए दौड़ पड़े।

सैन्को नाव के बीच में घुटनों के बल बैठकर ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था कि नाव किसी तरह बच जाए तब तक एक आदमी के बांस के धक्के से नाव उलट गई और दोनों पानी में आ गिरे।

यह देखकर चक्की वाले पानी में कूद पड़े और दोनों को खींचकर किनारे ले आए। तब तक नाव चक्की के पहिए में फंसकर टुकड़े-टुकड़े हो चुकी थी। उस नाव का मालिक एक मछुआ था और चक्की में आटा पिसवाने आया था। उसे डान क्विक्ज़ोट पर बड़ा गुस्सा आया। उसने डान क्विक्ज़ोट की गर्दन पकड़ ली।

डान क्विक्ज़ोट ने उसे समझाते हुए कहा, "तुम्हारा जो नुकसान हुआ है, उसे मैं पूरा कर दूंगा। लेकिन पहली शर्त यह है कि तुम लोगों ने इस किले में जिसे कैद कर रखा है, उसे फौरन छोड़ दो!"

यह सुनकर चक्कीवाला बोला, "अरे, मूर्ख, कैसा कैदी और कैसा किला? यह तो अनाज पीसने की चक्की है। तुम यहां क्यों जान देने आए हो?"

डान क्विक्ज़ोट बोला, "रहने दो, यह सब किसी और को सिखाना! मैं जानता हूं, तुम लोग जादूगर हो और तुमने किसी को इस किले में कैद कर रखा है। खैर, मेरे पास इतना वक्त नहीं है कि मैं हर तरह के झंझट मोल लेता फिरूं। मुझे दुनिया में बहुत बड़े-बड़े काम करने हैं।" फिर उसने चक्की की ओर मुंह करके और पुकारकर कहा, "अरे, दोस्तों! तुम लोग इस किले में कैद हो, लेकिन कुछ दिन और तुम्हें तकलीफ भोगनी होगी। फिर आकर मैं तुम्हें छुड़ाऊंगा।"

अब लोगों को ज़रा भी सन्देह नहीं था कि उन दोनों का दिमाग खराब हो गया है। उन्होंने उन दोनों को पीट-पीटकर वहां

से भमा दिया। डान क्विक्ज़ोट उनसे भी लड़ने के लिए तैयार हो गया; लेकिन सैन्को ने देखा कि किसी तरह जान बच गई है, अब यहां से भाग चलना ही ठीक होगा। वह अपने मालिक को समझा, बुझाकर लौटा लाया। नदी किनारे चलते-चलते वे फिर उसी जगह पहुंचे जहां डान क्विक्ज़ोट का घोड़ा बंधा था। दोनों फिर से अपने-अपने जानवरों पर सवार हुए और आगे बढ़े।

5

कुछ दिनों बाद सैन्को ने अपने राज में जाने की तैयारी शुरू की। शुभ दिन और शुभ घड़ी देखकर उसे विदा दी गई। डान क्विक्ज़ोट ने उसे बहुत-सी काम की बातें बताईं और आशीर्वाद दिया। इस तरह बिछुड़ते हुए दोनों को बड़ा दुःख हो रहा था। सैन्को की आंखों में आंसू आ गए।

बड़े ठाठ-बाट से सैन्को अपने खच्चर पर बैठकर अपने राज की ओर चला। उसका राज नदी के बीच बने एक छोटे-से टापू में था। एक हजार आदमियों की बस्ती थी। गांव के बड़े-बूढ़े सज-धजकर अपने ज़िलेदार का स्वागत करने आए। वे बहुत सम्मान के साथ उसे कचहरी में ले गए। वहां सैन्को ने सब लोगों को आशीर्वाद दिया और फिर अपना काम शुरू किया। उसे कई मुकदमों का फैसला करना था। सैन्को पांजा न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठा। उसके सामने मुकदमा पेश किया गया। एक दर्जी और एक देहाती ने सामने आकर उसे सलाम

किया।

दर्जी बोला, "हुजूर, कुछ दिन पहले की बात है कि यह आदमी एक दिन मेरे यहां कपड़े का एक टुकड़ा लेकर आया और कहने लगा कि मुझे इसकी एक टोपी बना दो। मैंने कहा कि बना दूंगा। इसने पूछा कि क्या इसकी टोपियां बनेंगी? मैंने कहा कि हां। फिर उसने तीन, चार और पांच टोपियां बनाने को कहा। मैं इस पर भी राज़ी हो गया। जब टोपियां तैयार हो गईं, तब भी यह मुझे अब तक पैसे नहीं देता। उल्टे यह मुझसे कपड़ा मांगता है, और कपड़ा नहीं तो उसके बजाय कीमत मांगता है।"

सैन्को ने डांटकर उस आदमी से पूछा, "क्यों जी, यह क्या बात है? इसके पैसे क्यों नहीं देते?"

वह आदमी बोला, "हुज़ूर, पहले आप इससे कहिए कि यह टोपियां तो दिखाए!"

इस पर अदालत में खड़े सब लोग हंस पड़े, क्योंकि दर्जी ने अपनी जेब से बहुत ही छोटी-छोटी पांच टोपियां निकालकर बाहर रख दीं। टोपियां इतनी छोटी थीं कि उनमें सिर्फ चार अंगुलियां ही जा सकती थीं। वह बोला, "हुज़ूर, ये रहीं टोपियां! मैं कसम खाकर कह सकता हूं कि इनमें से एक अंगुल कपड़ा भी मैंने नहीं बचाया।"

जज साहब ने थोड़ी देर तक इस सवाल पर सोच-विचार किया फिर उन्होंने फैसला दिया, "मुझे लगता है कि यह मामला कुछ अधूरा है, फिर भी मेरा हुक्म है कि दर्जी को सिलाई के पैसे नहीं मिलेंगे और इस आदमी को कपड़े का दाम नहीं मिलेगा। रही टोपियां, सो इन्हें किसी दूसरे आदमी को दे दिया जाए। चलो, तुम्हारा मामला खत्म हुआ। आगे बढ़ो!"

नये जिलेदार का यह फैसला सुनकर सब लोग हैरत में रह गए। लेकिन उसके हुक्म के खिलाफ कौन जा सकता था? लोग मुंह छिपाकर हंसने लगे। तब तक दूसरा मुकदमा पेश हुआ। दो आदमी सामने आए। उनमें से एक के हाथ में एक छड़ी थी और दूसरे का हाथ खाली था।

खाली हाथ वाला आदमी बोला, "हुजूर, इस आदमी ने मुझसे सोने की दस मोहरें उधार ली थीं। तब इसने वादा किया था कि जब मैं मांगूंगा तो मेरा धन मुझे वापस कर देगा। लेकिन जब मैं इससे मांगने गया तो इसने झूठ-मूठ ही कह दिया कि मैं सब मोहरें लौटा चुका हूं। अब हुजूर, अगर यह आपके सामने ईश्वर के नाम पर शपथ लेने को तैयार हो, तो मैं इसे छोड़ सकता हूं, वरना ईमानदारी की बात तो यह है कि इसे मेरा धन वापस करना चाहिए।"

सैन्को ने छड़ी वाले आदमी से पूछा, "क्यों जी, तुम इसके पैसे क्यों नहीं लौटाते?"

"हुजूर, यह आदमी झूठ बोलता है। मैंने इसे सब मोहरें लौटा दी हैं। आपके सामने मैं कसम खा सकता हूं।" यह कहकर उसने अपनी छड़ी उस आदमी के हाथ में थमा दी और ईश्वर के नाम पर कसम खाकर कहा कि मैंने जितनी मोहरें ली थीं, सब वापस कर दी हैं। जिस आदमी ने उसे मोहरें दी थीं वह यह सुनकर भौंचक्का रह गया। फिर उस आदमी ने अपनी छड़ी उसके हाथ से वापस ले ली और जिलेदार को सलाम करके बाहर निकल गया।

सन्को कुछ देर तक सोचता रहा। वह बड़ा अजीब मामला था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि असली बात क्या है। अचानक उसने उस आदमी को वापस बुलाने का हुक्म दिया। सिपाही दौड़े गए और उसे रास्ते से वापस लौटा लाए। सैन्को ने

उसके हाथ से छड़ी ले ली और दूसरे आदमी को देते हुए कहा, "लो, यह तुम्हारी मोहरें वापस मिल गईं। अब तुम जा सकते हो।"

वह आदमी आंखें फाड़कर देखता रह गया। उसकी कुछ समझ में नहीं आया। वह बोला, "सरकार, आप मुझ गरीब के साथ क्यों मज़ाक कर रहे हैं? क्या इस छड़ी की कीमत सोने की दस मोहरों के बराबर है?"

"हां!" यह कहकर सैन्को ने उसके हाथ से छड़ी ले ली और खट से उसके दो टुकड़े कर दिए। उसमें से मोहरें निकल पड़ीं। अदालत में सन्नाटा छा गया। लोग जज साहब की दिव्य दृष्टि पर आश्चर्य करने लगे। सैन्को की तरह न्याय करने वाला उनके नगर में आज तक कोई आया ही नहीं था।

इसके बाद और कई मुकदमे सैन्को को देखने पड़े। शाम होते-होते वह बुरी तरह थक गया। जब वह अपनी कोठरी में पहुंचा तो उसने देखा कि एक डाक्टर उसके खाने की परीक्षा कर रहा है। तरह-तरह के पकवान टेबल पर सजे हुए थे। डाक्टर एक-एक चीज को खाता था और कहता था, "यह बहुत भारी है, इसको खाने से बादी होने का डर है—इसे भी ले जाओ। यह गर्मी करेगा।" इस तरह वह रसोइये को हुक्म देता रहा और धीरे-धीरे टेबल पर से सारा बढ़िया खाना हटा दिया गया। डाक्टर की राय से सैन्को को बहुत ही सादा और थोड़ा-सा भोजन परोसा गया। सैन्को को ज़ोरों की भूख लगी थी। उसका पेट भी नहीं भरा। उसने डाक्टर को डांटा, "यह क्या है जी! तुम मुझे भूखों मारना चाहते हो क्या? चलो, निकलो यहां से; मुझे किसी डाक्टर वगैरह की जरूरत नहीं!" यह कहकर उसने डाक्टर को घर से बाहर निकाल दिया और फिर भरपेट भोजन किया।

6

इसी तरह उसके दिन बीतने लगे। दिन में उसे इतना काम करना पड़ता था कि वह थककर चूर हो जाता था। मुकदमे देखते-देखते ही उसे चक्कर आने लगता। धीरे-धीरे उसका मन यहां से ऊबने लगा। न वह कहीं घूमने जा सकता था, न किसी से मिल-जुल सकता था। हमेशा दो-चार सिपाही उसके साथ लगे रहते थे। सैन्को को लगा कि जिलेदार का काम कोई आराम का काम नहीं है।

एक दिन अचानक, जब वह गहरी नींद में सो रहा था, सारे शहर में हल्ला होने लगा। उसे फौरन जगाया गया। उसके नौकर बोले, "जिलेदार साहब, जल्दी तैयार हो जाइए; दुश्मन ने हमारे राज पर हमला कर दिया है। अब आप चलकर अपनी फौज संभालिए। आपके बिना हम कुछ नहीं कर सकेंगे।"

इस खबर से सैन्को पांजा बुरी तरह घबरा गया। उसने सोचा कि मैं यहां कहां आ फंसा। लड़ने-भिड़ने का काम तो मेरे सरदार डान क्विक्ज़ोट का था। उसने लोगों को वहां से भगाना चाहा, लेकिन कोई राज़ी नहीं हुआ। सब मिलकर उसे लड़ाई के लिए तैयार करने लगे। उसे खूब ज़िरह-बख्तर पहनाया गया। एक ढाल आगे और एक पीछे बांधी गई। फिर तरह-तरह के हथियार उसकी कमर में खोंसे गए और कुछ उसके हाथ में दे दिए गए। हथियारों का इतना वज़न था कि उनसे न चलते बनता था

और न ठीक से सांस लेते ही। मारे डर के वैसे ही हालत खराब थी। किसी तरह डरते-डरते और गिरते-पड़ते वह लड़ाई के मैदान तक पहुचा, वहां ज़ोरों की लड़ाई हो रही थी। भगदड़ मची हुई थी। अचानक सैन्को गिर पड़ा और किसी के पैरों तले कुचला गया। अंधेरे में लोग उसके ऊपर से होकर भागने लगे। थोडी देर में लड़ाई बन्द हो गई। आक्रमणकारी भगा दिए गए। उसके सिपाही उसके पास आए और जीत की खबर सुनाकर उसे उठाने लगे, "उठिए साहब, दुश्मनों को हमने मार भगाया है। आप आज हमारे साथ न होते तो हमारी जीत होना मुश्किल था।"

सैन्को को बहुत चोट आई थी, लेकिन लोगों ने समझा कि वह लड़ाई में घायल हो गया। वे उसे उठाकर लाए और फिर कोठी में कई दिनों तक उसका इलाज होता रहा। सैन्को पांजा ने अब तय कर लिया था कि वह अच्छा होते ही यहां से चला जाएगा। उसका यहां मन नहीं लग रहा था।

कुछ ही दिनों में उसकी तबीयत ठीक हो गई और सचमुच एक दिन वह अपने खच्चर पर बैठकर वहां से चल पड़ा। वहां के लोग अब उसे बहुत चाहने लगे थे। इतने अच्छे जिलेदार को जाते हुए देखकर वे बहुत दु:खी थे। सैन्को की भी आंखों में आंसू आ गए, लेकिन रुकने के बजाय वह फौरन वहां से चल पड़ा।

वह सीधा ड्यूक के पास पहुंचा और राज के किस्से सुनाने के बाद बोला, "साहब, मुझसे अब यह काम नहीं हो सकेगा। मेरा मन इसमें नहीं लगता। इस काम को करते हुए मैं आज़ादी से रह नहीं पाता, घूम-फिर नहीं पाता। अब मुझे छुट्टी दीजिए।"

ड्यूक जानता था कि उस दिन सैन्को के राज पर जो हमला हुआ था, वह उसके आदमियों ने ही सैन्को को तंग करने के लिए

किया था। उसने उसे बहुत मनाने की कोशिश की, लेकिन सैन्को नहीं माना। उधर उसका मालिक डान क्विक्ज़ोट भी एक जगह रहते-रहते ऊब गया था। उसने भी ड्यूक से जाने की इजाज़त मांगी। न चाहते हुए भी ड्यूक को दोनों को विदा करना पड़ा।

7

दोनों ड्यूक को धन्यवाद देकर सरगोसा के रास्ते पर आगे बढ़े। लेकिन आगे चलने पर एक आदमी ने डान क्विक्ज़ोट को वारसीलोन जाने की सलाह दी। डान क्विक्ज़ोट उसी तरफ चल पड़ा।

रास्ते में डान क्विक्ज़ोट को याद आया कि सैन्को पांजा ने अभी तक अपना वचन पूरा नहीं किया है और अपने को कोड़े मारकर डेलसीनिया को जादू से छुड़ाया नहीं है। उसने उसको इसकी याद दिलाई।

वह बोला, 'ज़रा धीरज रखिए साहब, मुझे अपनी बात याद है। किसी दिन मैं इसे ज़रूर पूरा करूंगा।''

चलते-चलते ये लोग वारसीलोन पहुंचे और एक जगह ठहर गए। पास ही एक नदी बहती थी। एक दिन सुबह डान क्विक्ज़ोट नदी-किनारे टहलने गया तो उसने देखा कि वहां एक दूसरा सरदार बहुत अच्छे घोड़े पर सवार हुआ इधर-उधर घूम रहा है। उस सरदार के पास भी मज़बूत भाला था और उसकी पोशाक भी

बड़ी खूबसूरत थी। नये सरदार ने डान क्विक्ज़ोट को लड़ने के लिए ललकारा। वह बोला, "डान क्विक्ज़ोट, मैं जानता हूं कि तुम बहुत बड़े सरदार हो और तुमने कई लड़ाइयां लड़ी हैं। लेकिन फिर भी मैं तुम्हें युद्ध के लिए ललकारता हूं मैं तुम्हारी डेलसीनिया को संसार की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी नहीं मानता। आओ, तुम्हारी इच्छा हो तो लड़ लो!"

डान क्विक्ज़ोट को बहुत दिनों से किसी से लड़ने का मौका नहीं मिला था। वह फौरन राज़ी हो गया। लेकिन लड़ने के पहले उस सरदार ने यह शर्त रखी कि जो आदमी हारेगा वह अपने हथियार यहीं छोड़ देगा और एक साल तक अपने घर में ही रहेगा। पूछा, "मंज़ूर है तुम्हें?"

डान क्विक्ज़ोट राज़ी हो गया। वह जानता था कि लड़ाई में जीत उसकी होगी। वह लड़ने के लिए तैयार हो गया। दोनों एक-दूसरे पर वार करने के लिए दूर हटकर निशाना साधने लगे। सैन्को पांजा इस तरह की लड़ाई-भिड़ाई से ऊब चुका था। इस-लिए वह दूर खड़ा रहा। नदी-किनारे घूमने वाले दूसरे लोग पास आ गए और इन दो सरदारों की लड़ाई देखने लगे। लेकिन यह क्या! नये सरदार ने एक ही वार में डान क्विक्ज़ोट को ज़मीन पर गिरा दिया। उसका घोड़ा भी घायल हो गया। नया सरदार डान क्विक्ज़ोट की छाती पर भाला तानकर बोला, "बोलो, अब तो तुम शर्त के मुताबिक घर लौट जाने को तैयार हो?"

डान क्विक्ज़ोट को लगा कि आज उसके भाग्य ने उसका साथ नहीं दिया। वह बहुत दुखी हो गया और बोला, "असल में मेरा ही दुर्भाग्य है, लेकिन मैं यह मानने के लिये तैयार नहीं हूं कि डेल-सीनिया संसार की सबसे सुन्दर स्त्री नहीं है। आज तुमने सारे

किए कराए पर पानी फेर दिया। इस हार में मेरी ज़िन्दगी भर की कमाई खत्म हो गई। अब तुम मुझे मार ही डालो। इस तरह अपमानित होकर जीने से मर जाना ज्यादा अच्छा है"

नया सरदार बोला, "नहीं-नहीं, महावीर डान क्विक्ज़ोट! लो, मैं यह भी मान लेता हूं कि डेलसीनिया संसार में सबसे अधिक सुन्दरी है, लेकिन तुम्हें अपनी शर्त के मुताबिक हथियार वगैरह यहीं छोड़कर कम से कम एक साल तक अपने गांव में रहना पड़ेगा।"

मजबूर होकर डान क्विक्ज़ोट को उसकी शर्त माननी पड़ी। अपने हथियार वहीं फेंककर वह सैन्को के साथ गांव की तरफ लौट पड़ा। असल में उसका मित्र सैम्सन ही था, जिसने उसे किसी तरह गांव वापस लौटाने के लिए यह चाल चली थी। डान क्विक्ज़ोट बहुत दुखी था और सैन्को पांजा के साथ चुपचाप चला जा रहा था।

कुछ समय बाद उसे याद आया कि सैन्को पांजा ने कोड़े खाकर डेलसीनिया को अभी जादू से नहीं छुड़ाया है। उसने सैन्को पांजा को फिर याद दिलाई। सैन्को भी अपने मालिक की हार से बहुत दुखी था। वह अब अपने को कोड़े मारने के लिए तैयार था। "लेकिन एक शर्त है। वह यह है कि मैं अपने को तीन हज़ार तीन सौ कोड़े मारूंगा, लेकिन बदले में आपको मुझे इसके चौथाई यानी आठ सौ पचास रुपये इनाम में देने होंगे। मैं कोड़े भले ही खा लूंगा, लेकिन घर लौटूंगा तो मेरी जेब में कुछ पैसे तो होंगे।"

डान क्विक्ज़ोट राज़ी हो गया। शाम हुई। वे लोग जंगल में ही रात बिताने के लिए पेड़ के नीचे जा बैठे। सैन्को अपने को कोड़े मारने को तैयार हो गया। डान क्विक्ज़ोट ने उसे समझाया

कि कोड़े बहुत ज़ोर से मत मारना। सैन्को एक पेड़ के नीचे खड़ा होकर अपने को कोड़े मारने लगा और चिल्लाने लगा। कोड़ा तो वह धीरे-धीरे मारता था और चिल्लाता था बहुत ज़ोर से। धीरे-धीरे अंधेरा होने लगा। इसका फायदा उठाकर उसने अपनी पीठ पर कोड़े मारने के बजाय पेड़ के तने पर कोड़े फटकारने शुरू किए। वह एक कोड़ा मारता था और बुरी तरह चिल्लाता था। डान क्विक्ज़ोट से यह देखा नहीं गया। उसने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, "रहने दो, मेरे दोस्त, कुछ नहीं तो भी तुमने करीब एक हज़ार कोड़े तो मार लिए होंगे। मैं नहीं चाहता कि डेलसीनिया के लिए अपने हाथों अपने को कोड़े मारकर मर जाओ। आज बस करो, बाकी कोड़े कल मार लेना।

"नहीं, सरकार, मैं आपसे पैसे लूंगा तो अपना काम अधूरा कैसे छोड़ सकता हूं। आपसे अगर सुनते नहीं बन रहा हो, तो आप कुछ दूर हट जाइए।"

अपने कान बन्द करके डान क्विक्ज़ोट वहां से दूर हट गया। सैन्को पांजा चीख-चीखकर पेड़ के तने को कोड़ों से पीटने लगा। अन्त में डान क्विक्ज़ोट से यह सब देखा नहीं गया। उसने सैन्को को पकड़कर अपनी छाती से लगा लिया। अपने वफादार नौकर को इस तरह से अपने लिए तकलीफ झेलते देखकर उसका दिल भर आया। दोनों ने वह रात वहीं गुजारी। दूसरे दिन वे फिर आगे बढ़े।

इस तरह तीसरे दिन दोनों ने ठाट से अपने गांव में प्रवेश किया। बिजली की तरह गांव में खबर फैल गई कि डान क्विक्ज़ोट लौट आया है। उसकी भतीजी, पादरी, हज्जाम सैम्सन, नौकरानी और सैन्को की स्त्री सब दौड़े आए। दोनों का खूब स्वागत किया गया।

फिर ले जाकर डान क्विक्ज़ोट को उसके बिस्तर पर लिटाया गया। वह बुरी तरह थक चुका था। अब वह लगभग बीमार हो गया था। उसे अपनी हार के कारण चैन नहीं मिलता था और इस तरह उसके मन का दुख और भी बढ़ता जाता था। उसने लोगों को अपने पराक्रम की कहानियां सुनानी शुरू कीं। उसने बताया कि इस बीच उसने कौन-कौन से बड़े काम किए और किन बड़े-बड़े योद्धाओं को युद्ध में पछाड़ा।

लेकिन डान क्विक्ज़ोट की हालत खराब होती गई। उसे कुछ-कुछ बुखार रहने लगा था। फिर वह और बीमार हो गया। अब वह बिस्तर से नहीं उठ सकता था। छः दिन तक वह चुपचाप अपने बिस्तर पर पड़ा रहा, न किसी से बोला न चाला। वैद्य ने उसे दवाई दी, लेकिन उससे भी कोई फायदा नहीं हुआ। उसकी भतीजी और नौकरानी उसके पास बैठकर रोती रहतीं। उसका वफादार दोस्त सैन्को दिन-रात उसकी सेवा में लगा रहता।

एक दिन छः घण्टे तक बराबर सोने के बाद डान क्विक्ज़ोट को नींद खुली। वह बोला, "ईश्वर का उपकार मानो कि आखिर उसने भूले को रास्ता दिखा ही दिया!"

उसकी भतीजी पास ही बैठी थी। उसकी समझ में यह बात नहीं आई। उसने पूछा, "यह क्या कह रहे हो, चाचा?"

डान क्विक्ज़ोट धीमी आवाज में बोला, "मैं कह रहा हूं कि ईश्वर का उपकार मानो कि आज मरने के समय उसने मुझे सही और गलत को ठीक-ठीक समझने की बुद्धि दी। अब मुझे समझ में आ गया है कि मैं बहुत मूर्खता करता रहा हूं और सपने की दुनिया में ही रहने की कोशिश करता रहा हूं। वीरता और पराक्रम की कहानियां पढ़-पढ़कर मैंने वैसा ही बनने की

कोशिश में अपना जीवन बेकार गंवा दिया। अब मैं मरते समय पादरी के सामने अपनी गलतियां कबूल करना चाहता हूं।"

इसी समय पादरी, हज्जाम और सैम्सन उसके घर आए। डान क्विक्ज़ोट ने उनके हाथ पकड़कर कहा, 'दोस्तो, तुम लोग यह सुनकर बहुत खुश होगे कि मुझे अपनी मूर्खता मालूम हो गई है। मैंने बेकार ही अपना नाम बदला और बहादुर सरदारों की नकल करने की कोशिश में अपने दिन बिता दिए।"

पादरी ने देखा कि डान क्विक्ज़ोट की आवाज़ धीमी पड़ती जा रही है। उसने ईसाई रीति के अनुसार उससे अपने सारे पाप कबूल करने के लिए कहा। फिर उसने वसीयतनामा लिखा और अपनी भतीजी को अपनी सारी सम्पत्ति का हकदार बना दिया। वह अपनी नौकरानी और अपने वफादार मित्र सैन्को को भी नहीं भूला। उसने उन्हें भी खूब इनाम दिया। सैम्सन ने उसे जब इस तरह मरने की तैयारी करते देखा तो उसका मन बहलाने की कोशिश की। लेकिन वह मुस्कराकर बोला, "दोस्तो, अब मेरी चिन्ता मत करो। अब मैं डान क्विक्ज़ोट नहीं हूं। मैं एलेनजो क्विक्ज़ोट हूं, मेरे माता-पिता ने मेरा नाम यही रखा था। अब तुम लोग मेरे लिए दुआ करो, ताकि मैं आराम से मर सकूं।

यह कहकर वह बेहोश हो गया। उसे फिर होश नहीं आया। उसके प्राण निकल गए।

○○

मुद्रक : के० के० प्रिंटर्स 7823